अंक : अप्रेल-जून, 2022

रजि. नं. 31319/77

ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

अप्रेल-जून, 2022

बरस : 45 अंक : 3 पूर्णांक : 155

संपादक
श्याम महर्षि

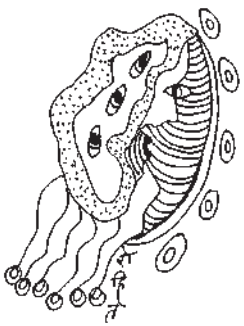

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

आवरण
रामकिशन अडिग

रेखाचित्राम
रोहित प्रसाद पथिक

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

राजस्थानी री मान्यता सारू कीं न कीं त्याग री जरूरत — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

गुवाड़ — *पूर्ण शर्मा 'पूरण'* — 4

उतर–पातर — *सत्यदीप* — 11

चिंतणदीठ

बुरा जो देखन... — *डॉ. मंगत बादल* — 20

आलेख

दूहा–सोरठा छंद मांय राजस्थानी वीर काव्य — *डॉ. चेतन स्वामी* — 26

पाणी बिन मिनख पतबायरो — *संग्रामसिंह सोढा* — 36

संस्मरण

पाड़ोसण किरायेदारणी — *निशान्त* — 39

कविता

रई गई रेत ज रेत / कारीगर / मयलो — *उपेन्द्र अणु* — 41

झाड़का / मिनखपणो अर मानखो — *भवानीसिंघ राठौड़ 'भावुक'* — 43

किन्ना / टीकल किन्नो — *डॉ. गौरीशंकर प्रजापत* — 45

सात समदरां पार सूं / सांसां रो साच — *गीतिका पालावत कविया* — 47

आवो! आपां अन्न बचावां / ग्यान री गोठ / गोरी — *अरुणा अभय शर्मा* — 49

गठजोड़ो — *डॉ. प्रमिला चारण* — 51

दूहा

आयो खेत बसंत — *योगेश यथार्थ* — 53

मत कर आतमघात — *मोहनसिंह रतनू* — 54

गजल

चार गजलां — *बनवारी 'ख़ामोश' चूरुवी* — 55

आंख्यां : तीन गजलां — *मोहन पुरी* — 57

भायला — *कल्याण गुर्जर 'कल्याण'* — 59

हाइकु

बीस हाइकु — *डॉ. अनिता वर्मा* — 60

दस हाइकु — *मोनिका गौड़* — 62

बाल कविता

फूल / रोबोट / आमां रो रस / वाणी रो जादू — *राजकुमार जैन 'राजन'* — 63

राजस्थानी री मान्यता सारू कीं न कीं त्याग री जरूरत

अभिव्यक्ति री आजादी सारू मातृभासा रो मुद्दो सै सूं सिरै है। पण राजस्थानी भासा नै संवैधानिक मान्यता नीं हुवण रै कारण प्रदेस री विधानसभा कै लोकसभा में चुणीज'र जावण वाळा प्रतिनिधि इण भासा मांय शपथ नीं लेय सकै। शपथ री तो बात ई छोडो, लोकसभा मांय राजस्थान रा पच्चीस सांसदां मांय सूं अेक-दो सांसद जका राजस्थानी री मान्यता सारू बोलता हा, बै ई अबार साव मून धार मेली है।

मातृभासा पेटै राजनीतिक उदासीनता रै इण रवैयै री मोटी पीड़ प्रगट हुई है लारलै साल ई पद्मश्री सूं सम्मानित डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत रै अंतस। उणां प्रधानमंत्री नै कागद लिख'र साफ सबदां मांय कैयो है कै जे राजस्थानी भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़'र मान्यता नीं दिरीजी तो बै आपरो पद्मश्री अलंकरण सरकार नै पाछो सूंप देवैला। आ अेक मोटी बात है। आ अेक संकळप रै सागै त्याग री भावना भी है। राजस्थानी री मान्यता सारू अैड़ै ई त्याग अर संकळप सारू त्यार रैवण री जरूरत है। हालांकै पुरस्कार तो पैलां ई लोटाईज्या हा। उण बगत मुद्दो दूजो हो। पण आपरी मातृभासा री मान्यता नै लेय'र इण भांत री पीड़ पैली बार प्रगटीजी है। कांई राजस्थान रा सांसद पद्मश्री डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत री इण बात माथै कीं गौर-गिनर कर'र मून सूं मुख हुवैला!

जिण भांत राजस्थान विधानसभा सूं राजस्थानी नै मान्यता रो संकळप प्रस्ताव पास करावण सारू कन्हैयालाल सेठिया मुख्यमंत्री सूं खास अरज करी ही, अैड़ी ई अरज अर्जुनसिंह शेखावत री इण पीड़ मांय भारत रा प्रधानमंत्री सूं है। आपरै इंटरव्यूं में उणां बतायो कै पद्मश्री लेंवती बगत भी उणां प्रधानमंत्री रै आगै आ बात राखी ही, तो उणां कैयो कै हां उण विचार चाल रैयो है। पण इण प्रस्ताव अर विचार नै चालतां तो बरस बीतग्या। भूखो तो धायां पतीजै। राजस्थानी आपरी मान्यता सारू त्याग मांगै अर आपां नै आपरै बूतै मुजब त्याग सारू हमेस त्यार रैवणो चाईजै।

—श्याम महर्षि

ISSN : 2320-0995

पूर्ण शर्मा 'पूरण'

गुवाड़

आ गाम री गुवाड़ है। दड़ींग गाम री दड़ींग गुवाड़। गाम छोटो कोनी पण रळगड है। रळगड रो मतलब जात-पांत सूं नीं, सुवांज-सपतर सूं है। जात नै तो सगळी जातां है अठै। नाई-मोची-लुहार-सुनार आद कारू जात सूं लेय दूजी पड़खाऊ जातां तकात। कीं घर सरदारां रा है अर कीं मुसळमानां रा ई है पण जातां दांई सुंवाज-सपतर मांय ई अठै सगळा मेळ है। केईयां रै बारै रो पीसो आवै तो केई आपरै पुरखां रै नाणै नै बोच्या बैठ्या है। केई दिनुगै जावै अर आथण पेट माथै हाथ फेरनै सोय जावै, निधड़क, तो केई सो कीं हुंवता-सोंवता ई सोवै कोनी। आखी रात तारा गिणबो करै। बिंयास गाम खेतीखड़ हुवै अर बीं रो सुंवाज ई खेती सूं गिणिजै। तो इंयां, ओ गाम ना तो अेन बिरानी है अर ना ई नैहरी। उतरादी सरै नैहरड़ी है अेक। बरसां सूं ई। जकी सूं अेक खाळियो नीसरै, गाम रै ढींगपाड़। आजकलै उणनै माइनर कैवै सगळा। नैहर अर माइनर रै आसै-पासै मुरब्बै-खंड रै गिड़दाव मांय ट्यूबेलिया ई है आं दिनां, जका थावर कोनी, फुरबो करै। साल-दो साल मांय तो नीं पण च्यार-पांच साल मुस्कल सूं ई काढै। तळी मांय पाणी तो है कोनी, फुरै नीं तो कांई करै ? भराव रो है, धिकै इत्तै धिकावै। पण पाणी फुरै, धणी कोनी फुरै। बो आपरौ मतो कोनी फोरै। ओजूं धक्को करै... ओजूं दरड़ो पटै। बखत नीसरै अर ओजूं बो ई फुराव। ओजूं पाणी फुरै... बो ओजूं दरड़ो पटै। ...छाती खोल्यां

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, तहसील नोहर, जिला हनुमानगढ़, राजस्थान - 335504 मो. 9828763953

 ISSN : 2320-0995

राखै, कुदरत रै साम्ही। धक्काखोरो तो है ई बो। धक्को करै जद बीं नै कुहाड़ी री जुरत कोनी हुवै, घण सूं ई काट देवै। धक्कौ करै जद ऊपरलै नै हेठै उतार ल्यावै। हंबै.. करसौ धक्कैखोरो है अैन लोहलाठ। भळ-भळ करती जेठ री लाय मांय धरती रो काळजो चीरतौ बो ऊपरलै साथै पाणौ मांडै... कै लै देख... कित्तोक देख सकै थूं... कित्तोक पिता सकै थूं...।

औ गाम असल मांय आं धक्काखोरां रो ई है। बस्यौ जद सूं ई। अर आ गाम री गुवाड़ है। खेतां सूं टळनै आयेड़ी... अैन खेत-सी। बिन्नै दूर तांईं देखो थे, पीपळ अर खेजड़ी ऊभा दीसै... सिर जोड़्यां। बठै सूं अठै इण पाणी री खेळ तांईं अर बिन्नै भभूतै सिद्ध म्हाराज रै देवरै सूं इन्नै जोहड़ री पाळ तांईं बीघां मांय पसरेड़ी है आ गुवाड़। पसवाड़ै चिपती गळियां जाणै गुवाड़ रै बांथ भर राखी हुवै। बांथ मांय भरेड़ी आ गुवाड़ असल मांय पैलां ताल हुंवती। आंधी चालती जद इण री आडी पसरेड़ी देही सूं कांकरा पाटता अर आंधी साथै दूर तांईं रड़बड़ाईजता। बूढिया बतावै कै म्हे टाबर हा जद जूती पैहरयां आं कांकरा माथै घणा ई रुढ़ता। अेकल-दोकल नीं पूरै गाम रा टाबर भेळा हुय जांवता ताल मांय। गोमदो गुदारौ, रळदू स्वाईच, हुकमो पंडत, स्योंदो मेघवाळ, आसो नायक अर अलादीन आद सैंग रा सैंग आ भेळा हुंवता गुवाड़ मांय। बाकायदै होड लागती रुड़णै री। सैंग अेक सूं अेक चढता खिलाड़ी... बाजीगर दांईं पून रै रळकै सूं पैलां फुरणिया। सगळा आपरी जूतियां रै तळां मांय तिलां रो तेल प्यांवता। तेल प्याअेड़ा तळां नै केई-केई दिनां तांईं घंस-घंसनै चीकणा करता। अर पछै होडाहोड रुड़ता। अेक रै पछै अेक आंधी रै रळकै साथै रुड़ता खिलाड़ी लैणबंध हुंवता तो किणई रमतियां दांईं लागता। चाबी भरेड़ा रमतिया। रुड़ता- रुड़ता केई गोळ घेरियै मांय रैय जांवता तो केई सीधा नीसर जांवता...दूर। लीक सूं पार हुंवतां ई केइयां री ढुही टिकती अर केई पूठा मुड़ जांवता। आ ई तो ही बाजीगरी। जकौ पूठौ मुड़नै आपरी ठौड़ साम्ह लेंवतो बो बाजीगर बजतो।

पण अबैं ताल बिस्यो कोनी। ना ई जुवान बिस्या रैया। हां... गुवाड़ बा ई है सागी। अलबत्त तासीर फुरगी। गुवाड़ रै अैन दिखणादै पासै ठाकुरजी रो मिंदर हुयग्यौ। जकौ पैलां गाम रै अैन बिचाळै हो। गऊमुखा घरां रै साम्हीं छूटेड़ै अेक कूणै मांय, मुसेड़ो-सो। पचासेक साल पैलां गाम कीं बारै खुल्यो तो दीठ ई खुली अर मिंदर री जिग्यां फुरगी। मिंदर अठै गुवाड़ मांय आयग्यौ। मिंदर सूं अैन सीध मांय थोड़ी भीतरलै पासै मसीत है। मिंदर बण्यो जद मसीत तो ही ई कोनी। मुसळमान भाई हा। पण घणा घरिया कोनी हा। जका हा बै, ईद-बकरीद नै अठै गुवाड़ रै मुहाण माथै भेळा हुय जांवता। नमाज पढता अेक साथै, लंगस मांय। भेळी नमाज देखणआळी हुंवती। धोळा-धक्ख अेक बरगा गाभा अर अेक बरगी छिब। लंगस मांय सगळां रा डील कदेई अेक साथै ऊभा हुवै अर कदेई अेक साथै हेठै, तो लागै, जाणै कुणई चाबी भरनै छोड्या हुवै। नमाजियां सूं छेड़ै

गाम रा दूजा बासींदा ई हुंवता। नमाज पढतां नै देखण खातर। गाम रा टाबर-टिकर ई क्यूं, लुगाई-पताईयां ई आपरै ओलो छिद्दो करयां देखती जांवती, ''मरो अे....मरो अे...।'' मिंदर बण्यां पछै केई साल नीसरग्या पण मसीत रो कोई जिकरो कोनी हो। पण आई साल जद खळां रै बखत होळै-ठाडै गाम रा बसेवान मुसळमानां कीं चंदो-चिट्ठो भेळो करणो सरू करयो तो गाम रा मौजीज मांणसां नै ठाह लाग्यो। ठाह लाग्यो, कै आं नै ई आपरै थान-मकाम री जुरत है।

मसीत चिणनै रो जिकर चाल्यो तो जिग्यां री बात आयी। क्यूंकै, गाम रै अगूणै पासै जठै मुसळमानां रा घरिया है बठै जिग्यां री थुड़ ही। संकता बै बात नै केई दिन तो मांय ई मांय घोटबो करया पण गाम रै मौजीजां नै ठाह हो ही। गाम भेळो हुयो अर अठै मिंदर सूं अेक पासै कीं भीतर नै लुळती जिग्यां मांय मसीत री जिग्यां देवणी तैय हुयगी।

गामै जठै हिंदुआं रा आठ सौ रै नेड़ै-तेड़ै घर हा बठै ई मुसळमानां रा घरिया जाबक ई थोड़ा हा। चूल्हा तो अलबत्त कीं बेसी हुय सकै पण बीसेक गुवाड़ी ई मानो, बस। मसीत चिणीजी जद छात तांईं पूगतां-पूगतां भैय लागण लाग्यो बां नै। लाग्यो, पार तो कोनी पड़ै। गाम रै चौधरियां नै ठाह पड़्यो तो बां बुलायो अर पूछ्यो, ''म्हे कीं स्हारो लगा सकां के?''

पण आ कियां हुय सकै ही।

दूजो आंटो काढीज्यो कै कोटैआळी चीणी मांय आपां सगळा कोटो छोड देवां। 'गाम री चीणी अर गाम रा ई मिंदर-मसीत।' फैसलो मानीजग्यो।

सगळा जाणै... बरत्यूं रो आंटो ई हुवै बस। मुसळमानां रो त्यूंहार आवै जद घरां जको बणै बो तो हिंदुआं रै घरां कोनी पूगाइजै पण सूका चावळ-चीणी तो पूगायां ई सरै। जात-पांत अर धरम रा आंटा-बळेडां मांयकर अेड़ा आंटा ई तो हुवै जका मड़कल हुंवता तासुआं नै ओजूं लट्ठ करै... लोहलट्ठ।

लोहलट्ठ तासुआं रै इण गाम जठै आपरी परापरी नै कीं-कीं ठायी राखी है बठै ई नूंवै च्यानणै खातर ई बारी खोल्यां राखी है। गामै मिंदर-मसीत अर गऊसाळा ई नीं, अस्पताळ अर इस्कूल ई बरोबर है। छोरा-छोरी भणै-गुणै अठै। हां.. हां, भणै ई है अर गुणै ई है। जद ई तो गुवांडी गामां मांय जिकरो रैवै इण गाम रो। पैलां तो नीं पण आं ई सालां मांय टाबर गदागद नौकरी लाग्या है। डागदर, इंजिनियर, फौजी अफसर...ठाह नीं कुण-कुणसै मैकमां मांय। बूढियां नै नांव ई कोनी आवै सगळा। केई टाबरां तो रळमिळनै सरकारू इमदाद सूं आपरा कामधंधा ई सरू करया है। धिनवाद है पुराणती पीढी नै अर लखदाद है बां री जाम नै, जका पाणी खातर माटी री सील पिछाणै। अगोतर खातर बखत री नाड़ पिछाणै।

इस्कूल सूं चिपतौ ई खेल मैदान है जठै दिनुगै पैलां कोई जावै अर देखै तो देखतो ई रैय जावै। बित्ती ई छोरी अर बित्ता ई छोरा। अेक रै पछै अेक लंगस मांय गोळ-गोळ गिड़दाव रचता रमतिया-सा भाजता टाबरां नै देखणियै री छाती मतै ई चौड़ी हुय जावै।

अर अबै मैदान रै आथुणै पासै भींत सारै लाठी रै ठेगै आपरी ठोडी टिकायां जका आं रमतियां नै ऊभा-ऊभा देख रैया है, बै हुकमो दादो है। ठाकुरजी रै मिंदर रा पुजारी। उमर लगैटगै अस्सी री हुयरी है। गेडियो कोनी, बोरड़ी री लाठी राखै हरमेस। मूंअंधारै ई नीसर जावै अर सुरजी ऊगाळी पछै बावड़ै। अबैं बै घूमनै ई आया है। मैदान रै ओछै चौभींतै ऊपरांकर दूर तांईं देखती बां री निजर स्यात मैदान सूं ई कीं दूर देख रैयी है। मिचमिची आंख्यां मांय किणी रील दांईं फुरता चितराम थोड़ी ताळ पछै बां रै सळां भरै चेरै रै पड़दै माथै ई दीसण लाग्या। सो कीं चडूड़। विगत अर आज बिचाळै जको है बो अर कीं-कीं स्यात आगमियो आंवतो ई। अबार काल ई बां रै पोतै विकास रो सलैक्सन आरअेअेस मांय हुयो है। घर अचाणचकै ई रंगां सूं भरग्यो, अर घरां सूं बेसी पूरै गाम मांय रंग-चाव हुयो। आज दिनुगै अखबार मांय फोटू ई छपी ही। इंटरव्यू साथै। हुकमो दादो तो मोबाइल कोनी राखै पण घरां टाबरां कनै है, सगळां कनै ई। काल दुपारै सूं रिस्तेदारां रा फोन माथै फोन आवै... बधाई हो...बधाई हुकमाराम जी। अर हुकमै दादै री छाती कुड़तियै मांय मावै ई कोनी। मावै क्यूकर... मान तो सैंग सूं बेसी बां रो ई बध्यो है। पोतो किण रो है... हुकमै जी रो। अर हुकमो दादो मांय ई मांय सोचनै चौड़ा हुवै। पोतै विकास रो ओ दूजो गेड़ो हो...। बो तीन साल पैलां इंटरव्यू मांय रैयग्यो हो। पण आं तीन सालां मांय बण कोई कसर कोनी छोडी। खेत मांय पाणी लगांवती बरियां करसो जियां अेक-अेक खूड अर डोळी संभाळबो करै, कै कठैई ऊंची-नीची जिग्यां नीं रैय जावै... कोई टेकरी सूकी नीं रैय जावै, अैन बियां ई विकास आपरी लारलै गेड़ै छूटेड़ी अेक-अेक चीज नै बरियां-बरियां जांच ली। बो रोज दिनुगै पैलां आपरै दादै सूं पैलां ई उठ जांवतो अर कुरळो-दांतळ पछै जुट जांवतो पढण नै। पण केई दिनां सूं बीं नै लाग्यो कै कठैई अड़कांस है अर बण अेक दिन बा अड़कांस आपरै दादै नै बतायी।

आपरी ठोडी नै लाठी माथै टिकायां हुकमो दादो बीं अड़कांस बाबत ई सोचै हा अर मांय ई मांय मुळकै हा। विकास जद कैयो कै दादा आ बात फकत म्हारै माथै ई लागू कोनी हुवै... आ समस्या तो सगळा पढेसरी टाबरां री है। अेकर-अेकर तो हुकमै दादै नै बातड़ी न्यावू लागी पण फेर ठाह नीं कांईं सोचनै बां हां भरली। दूजै दिन मिंदर माथै लागेड़ो धत्तू बंद हो। सुरजी दो लाठी चढ आयो पण आज मिंदर रो धत्तू कोनी बाज्यौ। कांईं बात हुयी। दादो कठैई बीमार-सीमार हुयग्या कांईं ? सोचै बित्ती ई बात। केई चालनै मिंदर तांईं आयग्या। पण दादो तो मिंदर मांय ई हा अर पूजा-पाठ रै लाग रैया हा।

सिंझ्या तांईं सगळै हवा फिरगी कै गामै टाबरां री पढाई खोटी हुवै इण खातर मिंदर मांय पूजा बिना धत्तू ई हुयसी। मौजीजां दादै री बात नै समझी, कुण नटै हो। मिंदर रो रेड़ियो कोनी बाज्यो तो मसीतआळो कियां बाजै हो। अेक नाळखै सूं फूटती फांग न्यारी क्यूकर हुवै ही। दूजै दिन गामगां रै कैयां पैलां ई मसीत सूं धत्तू हेठै उतरग्यौ। मिंदर माथै हफ्तै-खंड तो टंग्यौ रैयो पछै हुकमै दादै ई छोरां कनै सूं धत्तू हेठै उतरा लियो।

आ बात बारहा महीना पुराणी है पण दादो इणनै पुराणी हुवण कोनी देवै। बै रोज दिनुगै बिन्नै गदकालै खेतां कानी घूमनै आवै अर बावड़ती बरियां डोळी ऊपरांकर मैदान कानी ख्यांतै। देखै, फिरकी दांईं भाजता टाबरां कानी। देखबो करै... देखबो करै। देखतां-देखतां कदेई आपरै बाळपणै मांय जा बड़ै अर कदेई टाबरां रै भविख मांय। अर इस्यै मांय लाठी रै ठेगै टिकेड़ी बां री मुहाळ माथै आंवता-जांवता चितराम देख लेवो भलां ई। साव चडूड़ दीसै। चालती रील मांय चितराम फुरता जावै, अेक रै पछै अेक। छिनेक मांय ई ठाह नीं कित्ता पल-छिन, कित्ता दिन-महीना, साल टिप जावै आंख्यां साम्हीकर।

बै आपरै संगळियां साथै ताल मांय कांकरा साथै तिसळता जा रैया है। पगां मांय तेल चोपड़ेड़ी जूत्यां है अर मन मांय हौसलो। हौसलो इत्तो कै बै गोमदै गुदारै अर रळदू स्वाईच नै लारै छोड आया है। आसो नायक तो बां रै लवै-लवास ई कोनी। अलबत्त अलादीन अेक पांवडो लारै रूड़्यां आवै। बां आपरी हिक रो जोर लगायो अर कीं ओर आगै नीसरग्या। आगै नीसरतां ई रील रो चितराम ई नीसरग्यो। अबैं दादो गाम री गुवाड़ मांय बैठ्या है अर चौफेर बैठ्या है गामगा। गामगा आज सिरापंची मांय नांव काढण खातर भेळा हुया है। सगळां आप-आपरी राय दीवी अर छेकड़ फैसलो ओ हुयो कै चुनाव कोनी करवावां। आपां तो आपणो सरपंच निरविरोध बणायस्यां। सरकार इण खातर आपां नै कीं पीसौ देयसी बो न्यारो। पीसो गामै काम आयसी। अर चितराम ओजूं फुरग्यो।

मसीत रै गुंबद सूं धत्तू उतारण खातर मकबूल पेड़ी लगा राखी है अर सारै ई बीं रो दादो अलादीन अर काको सलामुदीन ऊभा है। अलादीन बां कानी देखनै मुळक्यौ है, पडूत्तर मांय बै ई मुळकग्या। बोरड़ी री लाठी लेयां बै अलादीन रै नेड़ै पूग्या इत्तै मांय चितराम ओजूं फुरग्यो।

पूरै गाम मांय ई उच्छब है आज तो। रीट रो रिजल्ट आयो है अर गाम रा दसियां टाबर मास्टर लाग्या है। त्यारी करणिया लगैटगै आधै सूं बेसी लागग्या। घर-घर कढाइया चढ रैया है अर घरां फोन माथै फोन आवै। बधाई हो बधाई। गामै चौफेर मुळक पसर रैयी है। दादै रै होठां माथै ई। मुळक कीं आगै पसरी अर पसरती ई गई। आज विकास ... बां रै लाडेसर पोतै रो आरअेस रो रिजल्ट आयो है। बो ऊंचा नंबरां सूं पास हुयो है। रिजल्ट आयां सूं लेय अबार दूजो दिन हुयग्यो बां रै घरां फोनां रो अर माणसां रो तांतो ई कोनी टूटै।

बारै बैठक मांय गाम भेळो हुयरयौ है। काल टेलिविजनआळा ई आया हा अर अखबारआळा ई। पोतै रो इंटरव्यू लियो तो दादै नै रळाय लियौ साथै। पोतै जद दादै नै साथै लेय फोटू खिंचवाई तो हुकमो दादो कीं तणनै और ऊंचा हुयग्या। दिनुगै अखबार मांय विकास री फोटू साथै ई आयी बां री फोटू।

बै अखबार मांय छपेड़ी आपरी फोटू नै देख रैया है। फोटू रै होठां माथै तिसळती मुळक थिर हुयगी है.... बां रै हरमेस मुळकतै होठां दांईं। बै केई ताळ तांईं अखबार री फोटू मांय बड़्या रैया। पछै बां री निजर तिसळगी। बां री फोटू रै अड़ोअड़ दूजी फोटूआं ही...अेक बरगा गाभां मांय कड़च्छ फोटुआं। अेक-दो स्हैरां री फोटुआं नीं, केई स्हैरां री फोटुआं। पण.. सगळी री सगळी अेक बरगी। लाल-केसरिया गाभां मांय कस्या-कसाया जुवानां री फोटुआं। अधबांहिया पैहरयां का पछै धोतियै माथै जनेऊ धारयां जुवानां री फोटुआं, तेल चोपड़ेड़ा डीलां री फोटुआं, त्रिपुंड मसळेड़ा लिलाड़ां री फोटुआं। हाथां मांय नागी तलवार... बरछा... लाठी अर भाला। ....छोटियो पोतो फोटुआं साथै समचार बांचनै सुणावै हो। गुवाड़ रै चौक माथै बैठ्या गोमदो, अलादीन अर हुकमो दादो समचार सुण्यां जावै हा... सुण्यां जावै हा। रील चालै ही.. लगोलग अर अबैं रील मांय अखबार री जिग्यां टेलिविजन लेय ली। बै ई सागी चौपड़ेड़ा डील आपरी नागी तलवारां नै हाथां मांय लेयां लैण सूं लैण जोड़्यां चौगड़दै पसरता जाय रैया हा। हजारूं लोगां रो टोळ मिंदरां सूं सरू हुयो अर स्हैर री गळी-गळी मांय पसरतो गयो। छिनेक मांय टोळ जाणै समद बणग्यो... लाल-केसरियै पाणी रो छोळां हुयेड़ो समद। सगळा बतळायेड़ा हुवै जाणै। पांवडै-पांवडै अैन सागी बिस्या ई बूकिया कसेड़ा जुवान त्यार लाधै। ''...धरम री जैऽ... भगवान.... री जैऽऽ ..'', जैकारा लागै अर समद रो पाणी कीं और पसर जावै। स्हैर री भीतरली गळियां... लाल लीक रै भीतर बसेड़ी बसास्त! समद रो पाणी अबैं इण बसास्त मांय बड़ग्यो... छोळांछोळ... अड़ड़... अरड़ड़ड़... ड़ड़! पाणी हिंदुआं रै घरां नै छेकतो मुसळमानां रै घरां तांईं जा पूग्यो। बंद बारणा रळबड़ाइज्या... खुला दुराजा भेड़ीज्या पण पाणी तो पाणी हुवै। पाणी अर आग रै जोर रो कांईं मापीणो। अणमाप अर अणथाग जोर! घरां मांयकर छेरां हुंवतो पाणी मसीत री पेड़ियां साम्ही जा लाग्यो। ओह! छिनेक मांय मसीत रै बारणै साम्ही जाणै आखो समद ई भेळो हुयग्यो। गळी मांय ..हेठै तळी सूं लेय ऊपर मसीत रै गुंबद तांईं। पाणी गुंबद रै नुग्गै तांईं जा पूग्यो अर अजान देंवतो धत्तू अेक छिन मांय समद मांय डूबग्यो। अबैं बठै मसीत ही, अजान कोनी। जैकारां हा, का पछै हड़मान चाळीसो हो.... अखंड हड़मान चाळीसो। अजान री गूंज जित्ती दूर तांईं जावै ही उण सूं बत्ती जावै ही अबैं हड़मान चाळीसै री गूंज। गूंज इब मीट करती सरकार रै कानां तांईं पूगी अर बण कान खड़खड़ाया। दफतरां री घंटियां बाजी। मोबाइल कानां रै चिप्या

अर देखतां ई देखतां लाल अर केसरिया रंग साथै समद मांय अेक और रंग आ रळ्यो। खाकी रंग।

राज रा अेलकार आया, पुलिस आयी तो दूजै पासै ई कीं सळफळाट हुयी। नस तणी, फळबंट हुयी अर खाकी रंग साथै-साथै धोळो रंग ई आ घुळ्यो। रातो समद अबैं इकरंगो नीं बिदरंग हुयग्यो।

''धत्तू मसीत सूं उतरयो है तो मिंदर सूं ई उतारस्यां...।'' बात तो बात हुवै। बात नीं तो बेबात ई हुवै। बात उछळै तो भाठा दांईं उछळै। पण जद अेक भाठो उछळै तो पछै रा भाठां री गिणती कोनी हुवै। भाठा बाहिज्या... अेक.. दो..तीन.. ठाह नीं कित्ता...। हुकमै दादै सूं गिणिज्या कोनी। गिणतां-गिणतां बै धूजण लाग्या।

हुकमो दादो लाठी रै ठेगै ठोडी टिकायां ऊभा हा पण बां सूं ऊभो कोनी रैयिज्यो, लाग्यो, आखै डील री रूंआड़ी चिपगी जाणै। लोथ हुंवतो बां रो डील इब पड़सी..इब पड़सी। उतावळी-सी बां आपरै पगां नै आगै-लारै करया अर कीं सावचेत हुवण री कोसिस करी। इत्तै मांय लारै पग घींसता सुणीज्या।

बां लारै मुड़नै ख्यांत्यो। कोई कोनी हो। बैम हुयग्यो इयां ई। बै मुळक्या पण मुळक सांचरी कोनी अर आमण-दुमण-सा गाम कानी टुर लिया। चौभींतै री कूंट पार करी तो देख्यो, साम्हीं खुलती गुवाड़ मांय मसीत अर मिंदर री धवळी देही दिनुगै री कंवळी तावड़ी मांय दिप-दिप करै ही। बां रै होठां टुटेड़ी-सी मुळक सरक आयी।

◆◆

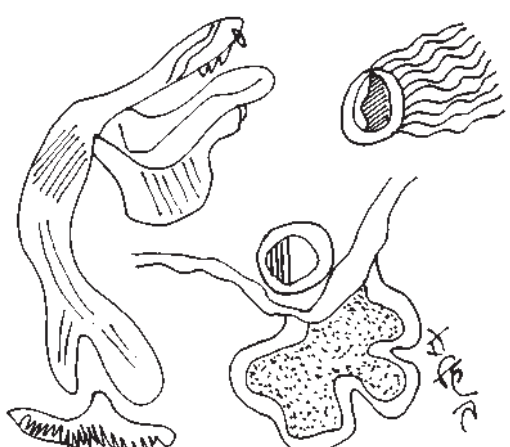

सत्यदीप

उतर-पातर

दिन भुंवीजता बतूळिया हुवै। भूरजी दो कम सित्तर रै अेड़ै -गेड़ै पूग परा बिसांई लेवै, कै बिसांई बांनै झालणै री जुगत बिठावै। दोन्यूं बात ई अेक-दूजी नै सांभै।

भूरजी जंगळात मैकमै में बाबू हा, पण रैवण-सैवण अर ठरको अफसरां सूं ई बत्तो हो। क्यूंकै जठै बै हा बो उजाड़ इलाको हो तो अफसर बापड़ा के खोदै अर के बूरै! भूरजी री बाबूगिरी हेटै च्यार बागवान, आठ चौकीदार अर दो चपरासी। अब भूरजी जाणै फोगलै सूं घिंट्याळ ई हा। आछी मजूरी रो सरंजाम भी हो। पण बात है उतर-पातर होवणै री।

आ कहाणी कीं अलायदी है। राज रै काज नैं छोड'र जद भूरजी री अबार कूंत करां तो अेक नूंवो भाव दरसावै। रिटायर हुयां पछै जद गांव आया भूरजी तो अेक अजब-सो खिंचाव उणां रै मूंढै माथै हो। म्हारै साथै भूरजी आपरै जी री गुरबत कर बफारो काढ लेंवता हा। बियां बै बतरसिया हा। आ आदत बांनै बांरा दादा सूं मिल्योड़ी ही। भूरजी रा दादा गांव में हथाईदार अर बातपोशी रा गारडू बाजता। तो ठाला भूरजी दो काम पोळाया हा, अेक तो खाली पड़त री जमीं पर रूंख लगाणा अर दूजा आपरी बैठक में हथाई रो हेत गाळणो। म्हनै भूरजी आपरो खास मानता हा। सीधो हेलो पैलपोत म्हनै ईज लागतो। म्हैं भी अडीक राखतो हो उणां रै हेलै री। म्हारी जोड़ायत सदां ई म्हनै हंसती ही—''रूं-रूं टूटै है

'अपनत्व', वार्ड नंबर 29, आडसर बास, श्रीडूंगरगढ (बीकानेर) राजस्थान मो. 6367096051

भूरजी रै हेलै तांई थांरा। इसी के घोळ'र पाय दी थांनै कै सिंझ्यां हुयी नीं कै थे तकावणो सरू कर देवो उणां रै हेलै कानी।'' म्हैं पड्डूतर के देवै हो! बस मुळक'र चुप खांची राखतो। बस बियां कोई हुवो, आपरी घरआळी री बात पर चुप रैवै बो चोपड़ी जीम'र सौरा दिन काढ सकै। नींतर झींका बै बाजै कै राम टाळै! खैर, आं बातां में के धरियो है, आपां पाछा मुड़ां भूरजी पासी। आज भूरजी अजै धुंई जगती को करी ही नीं।

म्हैं सोच्यो, आज म्हांटी इयां-कियां हुई? सदां तो भूरजी दो-तीन हेला कर दिया करै। आज म्हैं ई उफत्योड़ो हेलो कर लियो, ''कियां भूरजी... आज मोड़ो कर दियो, धुंई-धपड़कै में।''

हेलो सुण'र भूरजी बारै आय बोल्या, ''के बतावां बाऊजी, आज गुरांसा रो दिन हो तो, बां रै पूजापाठ कर जोत सारू धूपिया जचावै हो, पछै जोत कर'र सलटाई इत्तै थे जाणो हो, बगत तो म्हांटो लागै ई है। खैर, अबै पगलिया करल्यो, के परळै हुवै है?'' भूरजी आपरी आदत मुजब बात नै ठरको दियो, ''देखो बाऊजी, 'रात हुयां पछै मोड़ो कोनी अर उधार मिलै जित्तै फोड़ो कोनी'। अब आयल्यो करां धुंई सैंचन्नण, गुल्लो अर गुमानो भी इत्तै नै आया रैसी!''

खैर, पगां में चपलड़ी घाल'र म्हैं टुर लियो। पाछै सूं सुषमा, म्हारी जोड़ायत टुणकलो न्हाख ही दियो, ''ल्यो, खदबदै ही खिचड़ी हारै में, अब देसी ठंडा छांटा बापड़ा! बुझग्या पित-पाणी बापजी रो हेलो सुणतां ही।''

म्हैं के कैवै हो, बोलबालो नीची नाड़ कर'र टुर ब्हीर हुयो।

भूरजी बाखळ में लकड़ी छाणा जचावै हा धुंई में अर कोई निरगुणी संत री बाणी उगेर राखी ही—

मिनख जमारो बंदा अेळ्यो मती जाण दै,
सुकरथ करलै जमारै नैं।
पापियां रै मूंढै सूं राम कोनी निसरै,
केसर ढुळ रैयी गारै में।
माणक मोती मिलिया मूरख नैं,
दळबा लाग्या सारै नैं।
हीरां री परख तो जाणै जंवरी,
कांई ठा मूरख गिंवारै नैं।
गुरु इमरत अमर भया जोगी,
जार लियो काचै पारै नैं।
भूरियो भजन हरि नांव रो करसी,

हरि मिलसी दसवैं द्वारै में।

भूरजी आपरी झीणी रागणी सूं बाणी गावै हा, म्हैं बड़तो ई बोल्यो, ''वा सा भूरजी, के राग है, के बोल है!''

''ना ओ बाऊजी, क्यांरी राग'र क्यांरा बोल। गुरांसा रा बोल है, चितार लेवां कदै-कदास। थे सुणावो बाऊजी, के हुय रैयो है अबार?'' बै जाणै हा, म्हैं कहाणी कविता लिख्या करूं।

''के बतावूं भूरजी, अेक कहाणी लिखणी ही पण कीं पर लिखूं, समझ में ई को आवै नीं।''

''समझ में के आसी बाऊजी! थे तो भूंगळ रा घेसळा मारो हो, कहाणी के हुवै थांनै के ठाह! थे तो सुणो आ कहाणी—कहाणी कै है मांयली पीड़ जद उमटै तो आंख झरै, आंख झरै तो पीड़ परगटै। पीड़ ई कहाणी बणै बाऊजी।''

इत्तै में गुल्लो जी, गुमानो जी भी आय लिया हा। धुंई भी आछी तरियां जगरै चढगी ही। रामा-स्यामा कर'र बिछ्योड़ी बोरियां माथै टिकग्या हा। बैठ्यां पछै म्हैं पाछा भूरजी नैं कुचर लिया कै पीड़ आळी कहाणी किसी हुवै। थे ईज फरमा देवो बापजी!

भूरजी करड़ो खंखारो कर'र बोलणो पोळायो तो कद कहाणी बणगी, आ तो कागद पर उतरी तद ई ठाह लाग्यो। तो भूरजी कथी ही आ उतर-पातर। उतर-पातर ई मांयली पीड़ है। भूरजी बोलै हा अर म्हैं सुणै हो, गुणै हो।

भूरजी सरू करी आपरी बात—

''बाऊजी, थे तो जाम्या हा कै नईं, पण म्हैं पढाई पूरी कर'र खल्ला फाड़तो फिरै हो। मसखरै टाइप में बोलणो, अखाणा री लाग्योड़ी घूंटी सूं सामलै नैं हंसी रा सबड़का दिराणै में आछी पकड़ ही। दोपारां पनजी पनवाड़ी री दुकान बैठ'र ठरका देंवतो हो तो दिन दसेक पछै जंगळात मैकमै रा अफसर भी बठै पान खावणै सारू आंवता हा। ठाह कोनी बां रै म्हैं जच्यो कै म्हारी बातां रा लसरका। अेक दिन म्हनै पूछ लियो, 'यार, तूं तो जोरको मजेदार मिनख है। के करै है?' म्हैं बोल्यो, 'बापू होटल में जीम'र गाभा अर लीतर फाड़ लेवां और ठाला बैठ्या करां ही के?' बै बोल्या, 'ठाला क्यूं बैठ्या हो, कीं काम करल्यो।' म्हैं कैयो, 'काम तो के करां, पढ लिया तो खेती सूं छींक्या आवै, बाणियै रै जावां तो खाल कढै। कोई सरकारी नौकरड़ी री ताबै लागै तो देखां!' मजाक-सी करतो म्हैं म्हारी बातड़ी सिरका दी। पनजी स्हारो लगायो, 'साहब, अै भूरजी आदमी तो सळिया है। थे कोई कामड़ै री ढब बिठावो नीं। थांरो हाथ तो थांरै मैकमै में ठाडो-ठावो है।' बै बोल्या, 'हूंऽऽ सोच सूं, देखां कांई ताबै लागै।' बात बाऊजी, आई गई-सी हुयगी ही। म्हैं किसो भरोसो करै हो। रात गई बात गई सी मान बै ई बैंगण अर बा ईज छाछ करतो दिन

टपावै हो। तो बाऊजी अेक दिन बै आया हा, आपणाराम बियां ई पनजी री दुकान माथै बातां रा ठरका देवै हा। बै म्हनै कैयो, 'भूराजी, थांरी पढाई रा कागदिया तो म्हनै दिया।' म्हैं पूछ्यो, 'कद?' बै बोल्या, 'काल इत्यारां ई म्हनै दे दिया। बख में बातड़ी लखावै है, अठै जंगळात रो छोटो दफ्तर पंदरैक दिन रै मांय-मांय खुलसी, लागै सांवरियो साथ दियो तो थांरो नाको लाग ज्यासी।' मिनकी रै भाग छाबड़ियो-सो लाध लियो हो। म्हैं आगलै दिन म्हारा पढाई रा कागद बांनै पकड़ाया अर घरां आय'र मां नैं बतायो तो बा अणूती राजी हुई। इक्यावन रिपियां री परसादी भी कुळदेवता रै चढाई ही।

''दिन दसेक पछै बै साब आया अर म्हनै पान री दुकान पर मिलग्या। मिलतां ई कैय दियो कै थांरी परख है भूराजी, कालै टेसण सारै री धरमसाळ में दफ्तर रो जाचो जचायो है। थांनै काम संभाळणो है। म्हारै तो बाऊजी, आछी तावै लागगी। जाणै मालक पनवाड़ो-सो ई पुरस दियो हो। आगलै दिन म्हैं बीं दफ्तर, मां रै पगां लाग, देई-देवतां नैं धोक देय'र बगतसर पूग लियो हो। काम बै समझा दियो हो, दो रजिस्टर अर अेक टाइपराइटर रो धणियाप भी दे दियो हो। तो बाऊजी, संकटियां रा संकट सांवरै री महर सूं कट्या।

''अठै काम तो सरू हुयो को हो नीं, बस दफ्तर थरपीज्यो ईज हो। पण ध्यानगी सरू ही, तो आपणां के कांटां में हाथ जावै हा। दो महीनां पछै अठै रा अेम.अेल.अे. खुद आया हा तो बै काम री जुगत ई ल्याया हा। अेक पूरो बीड़ रो हिस्सो जंगळात मैकमै रै हेटै कर उणमें धोरा बांधणै अर रूंख लगाणै रो काम हो। साब अर अेम.अेल.अे. साब आपसरी में के गुरबत करी बा तो ठाह को लागी नीं पण दोन्यूं मुळकता बारै गया हा। आपणै के लेवणो! आपां तो काम नैं जतन सूं करां, आ ईज जी में धार काम करणो पोळायो।

''काम सरू हुयो तो केई भांत रा रजिस्टर आया हा। खेबी तो अब हुवणी ही। काम री मंजूरी आई तो दफ्तर में आदमी और बधग्या हा पण हा म्हारै सिरखा सिफारसिया ईज। अेक नाजम साब रो भतीजो, अेक साब रो भाणजो अर दो अेम.अेल.अे. साब रा जाणीकार। न्यारा-न्यारा काम हा। अेक तो जूनी झाड़-झाड़क्यां काटणी, दूजी पड़ालां पर पाळ बांधणी अर नूंवा रूंख लगावणा। सगळा कामां रा ठेका हुवणा हा, तो केई ठेकेदार मेह रा बधाऊड़ा-सा भूंवै हा। साब जाणै अर साब रो काम, आपां नै के लेवणो हो बाऊजी। आपां तो दफ्तर रो काम सांभणै री भोळावण ली ही। बो बगतसर पूरो कर देंवता हा। कोई ओळमो नीं मिलै, इण बात रो पूरो ध्यान राखतो हो। ठेकेदार जद भी कोई बात जाणनी चांवता, म्हैं बिना लाग-लपेट बांनै बता देंवतो। किणनै ई कोई सिकायत म्हासूं को ही नीं। पण अबखाई तो काम रै बाद हफ्तो चुकारै रै दिन आयी। उण दिन भीड़ ही मजूरां री। जका ठेका पास हुया हा, बै ठेकेदार भी हा। उण दिन अेक और मिनख आयो हो अर साब

कनै बैठ्यो हो। बो ठाडी तावळ मचा राखी ही। साब भी आप फणां-तणां हुय मेल्या हा। बात रो सार बाऊजी ओ हो कै म्हारै भी झोबा आवै हा। म्हैं बै सगळा कागद जचा'र बिल बणाय साब कनै लेयग्यो। साब बिल पास कर'र भुगतान रा चेक बणाया अर ठेकेदारां नैं सूंपै हा। पछै बै म्हनै अेक कागद और दियो अर बिल बणाणै रो कैयो। म्हैं इचरज सूं बां कानी जोयो तो बै बोल्या, 'भूराजी, बणा ल्यावो, म्हैं कैवूं हूं नीं थांनै।' बिल तो खैर बणाणो ई हो बाऊजी, बणा ल्यायो। साब उणनैं भी पास कर दियो अर चेक बीं आयोड़ै मिनख नैं सूंप दियो। बो घंटा भर में बैंक सूं पीसा भी लेय आयो। सिंझ्या हुयगी ही। दफ्तर आज बगत सूं दो घंटा लेट बंद हुयो हो। म्हैं म्हारा कागजिया संभाळ जचावो हो कै जित्तै नाजम साब रो भतीजो आयो अर म्हारै साम्हीं दो सौ रिपिया राख्या अर लेवणै रो कैयो तो म्हैं साव नटग्यो हो। बो पाछो जाय'र साब नै बतायो। साब म्हनै बुलायो तो म्हैं गयो बाऊजी। साब म्हनै बुला'र समझायो, 'भूरजी, थे अै पीसा लिया कोनी।' म्हैं कैयो, 'हां साब, औ के तोजो है?' बै बोल्या, 'भूराजी, थांनै ठाह है कै बोरिया सूं लड़ालूम झाड़की बढै जद बोरिया नीचै खिंडै है, बांनै कोई नीं सौरै तो रेत में रळ रेत बणै उणसूं पैल्यां कोछै में घाल लेवणो ई समझदारी हुवै कै नीं? पछै कोई और चुगै कै रेत बणै उणसूं आछो है चुग'र झोळी में घालल्यो। आपां पाछ राखां तो मूरख बाजां। ल्यो, राखल्यो म्हैं कैवूं हूं नीं थांनै। ओ तोतक तो चालसी।' बाऊजी, बै रिपिया धूजतै हाथां म्हैं झाल लिया हा। साब म्हां साम्हीं देख'र हड़हड़ हांस्या हा। तो बा ल्याळ उण दिन नीं चांवतां ई लागगी ही। नौकरड़ी करणी ही अर कीं अलायदी रो आवणो इसो गंडक आळो हाड बण्यो कै राफ्यां में चसड़-चसड़ खून खुद रो ईज लागै हो।''

धुंई चट-चट सिलगै ही अर बात्यां रा लसरका भूरजी रा दड़ाछंट चालै हा। भूरजी री बात बताणै रो ढंग ई इसो हो कै जाणै कोई कथा बांचणिया महाराज मीठै बोलां भागवत बांचता हुवै। कथा ज्यूं-ज्यूं आगै बधै ही, रस आवै हो। म्हे तीनूं जणा कान धोबा-सा मांड्या सुणै हा।

भूरजी आगै बोल्या, ''तो भाई कानसा, अब डूब्यै नै तीन बांस, साब रो समझाणो अर सागलां रो अेक सुर, म्हैं भी बीं बैंवती बेतरणी में गावड़ी री पूंछ झालली ही। धीरै-धीरै ध्यानगी पर लागी नौकरड़ी भी पक्की बणगी ही। तीन साल पछै अेक दिन साब पूरै दफ्तर में काम करणियां नै बुलाया। बै बतायो कै अब औ दफ्तर छोटो दफ्तर हुयग्यो है, अठै सूं म्हनै जिला दफ्तर में जावणो पड़सी। अठै बाबू अेक ई रैवणो है, तो बतावो कुण अठै रैयसी? अबार म्हैं कोसिस कर'र थांनै अेडजस्ट करवा सकूं हूं। नाजम साब रो भतीजो अर अेम.अेल.अे. साब रो भाणजो बांनै जिला दफ्तर में लगाणै सारू कैय दियो। अेम.अेल.अे. साब रो भतीजो कोई और पूग सूं कोपरेटिव बैंक में नौकरड़ी रो जाचो जचा लियो हो। पण म्हारा राम री घर री गाडली सावळ तनखा अर दो पीसा अलायदा मिलणै

सूं जबरी चालै लागी ही अर धाको सावळ धिकै हो। म्हनै और तोजै री कोई चांवना ई कोनी, सो म्हैं साब नै अठै ईज जापड़-तापड़ करणै रो कैय दियो हो। अेक म्हैं अर अेक और बाबू, दो चौकीदार अर दो बागवानां सारू हो औ जंगळात रो दफ्तर। अफसर बैठै जिला दफ्तर मांय अर गोडैसूंणो राज अठै हो म्हारो बाऊजी, सो रायकण डाकण जाणै ऊंट चढी। कोई कैवणियो न कोई सुणणियो! 'आंधै री सीरणी अर मुड़-मुड़'र भरै गूंझिया खुद रा'। ल्याळ जकी लागी बाऊजी, तो हक सारू हांती सगळां री। जाणै हो बाऊजी, दापै रो धन अर ऊपरली आंवत बांट-बांट खावै बो बैकुंठा ई पावै। म्हारा गुरु हा म्हारा पैलड़ा साब, सो म्हैं म्हारै काळजै आ बात गांठ बांधली ही। बियां अेक गुरुमंतर और हो, पढती बगत हिंदी आळा मास्टरजी बतायो हो कै जे सुख सूं जीणो जगत में तो बगनो बण कै जी। जाणो चायै सिस्टी रो ग्यान, पण अफसर साम्हीं रैवो अणजाण।

लला चपी लाडली, करी राख हरमेस।
बो नर तो ठेकै नहीं, फिरल्यो आखै देस।

तो बाऊजी, आपणी पावली आं मंतरां री पाण पूरी पांचाना में पळकती ही।''

बातां रै चालतै लोरां री झीणी फुवारां झिरमिरै ही कै धुंई कजळाईजण लागगी ही। गुमान जी बोल्या, ''भूरजी, बातां रा भतूळिया धुंई री ओग ई उपाड़ली लागै।''

''हां सा, बातां-बातां में ठाह ई को लाग्यो नीं सा—बगत अर बास्तै रो। खैर सायरां साची कैयी है—

बातड़ल्यां घर ऊजड़ै, चूल्है दाळद आय।
पण जे जाणै बातड़ी, ऊजड़िया बस जाय।''

भूरजी खेजड़ी रा दो छड़ा अर च्यार छाणा धुंई रै मूंढै में राळ्या, तो पाछो बासती सैंपूरको अर बात रो झिलोरो पाछो।

भूरजी री बातां सूं अेक तो आ लखावै ही कै चोर मिनख हुवै कोनी। बगत रा फटकारा ईज उणनैं चोर बणावै अर दूजी आ कै भूण पर पाणी काढणै सारू बगतै रंडू नै घिसणो ई पड़ै। नीं चांवतां ई भूरजी सिस्टम रै करोसियां सूं उळझायै सूत री जाळी बणग्या हा। भूरजी बात आगै टोरी। बोल्या, ''बाऊजी, कोनी जी में ही पण म्हनै समझ में आयगी ही कै जे सिस्टम सूं बाथेड़ो कर लियो तो दूध में पड़ी माखी-सो अलायदो फेंक पसवाड़ै कर दियो जासूं कै गोयरै नै जियां सोटां सूं सलटाईजै, बा गत हुयां सरसी। अब सीरो खाय'र जाड़ घिसाणै री ई धारली ही। जीमो-कमावो, खावो-खुवावो रै सिद्धांत साथै थाळी पुरसी राबड़ी रै सबड़कां रो सीर। राज अर राज रा खाड़ैती विकास रा भरोटिया बांधै हा, तो खिंड्योड़ी लकड़ी रा भारा डोळ सारू अबै म्हैं ई बणावै लाग्यो। हां, म्हैं स्याणो इत्तो जरूर हो कै हांपळा को मार्‌या नीं। सौरप में हाथ लाग्या बठै ई संतोख कर लियो। इण

बिचाळै काम सालूंसाल मोकळा आया। बै ईज रूंख लगावो, मेड़ां बांधो। बाऊजी, आछी-भली गोचर मांय तारबंधी कर'र सफेदा अर कीकर लगा'र जमीं जाणै बांझड़ी कर दीन्ही ही। आपणा फोग, सींवण, बूर अर कुमटिया रा भरचक बुला दिया हा। झाड़क्यां झड़'र जुगती सूं पीसो बण मोटा अैलकारां री हेल्यां सारू काम आई तो झूंपड़त्यां रै दड़को म्हैं ई देवणै में डोळ सारू पाछ को राखी ही नीं। दफ्तर चालतो रैयो, बिगसाव हुंवतो रैयो। आखी रोही कीकरां सूं लड़ालूम। डांगर भलांई भूखा मरो, खेतां में उजाड़ करो। न कोई कैवणियो, न सुणणियो। पैपाबाई री कचैड़ी! लेखा लिखीजै, सौदा पटीजै। 'तूं ना कैयी म्हारी, तो क्यूं म्हैं कैस्यूं थारी' रै नांव जिकी बांदरबांट आखै मुलक में बगै ही तो कीड़ी बरगो दफ्तर भी बगती गंगा सूं नहर काढ'र पाणी उळींचणै में संको कर'र कसर थोड़ी राखतो। बाऊजी, अफसर आंवता रैया, जांवता रैया। भूरजी बना छौ जाणता रग। आंवतो अफसर साच अर ईमानदारी रो जाडो दही जमावतो तो समझ में झट आंवती ही कै अबकै पांती आपणी कम अर बांरी पूरी। पण जी धपायो राखता कै किसा तिल तोल्या हा, रावळै रो तेल पल्लै में ई चोखो। आपणै के घाटो, पल्लो चीकणो ई सही। सावळ अफसर हुंवतो तो चुग्गै सीर सगळै कबूतरां रो सवायो।''

भूरजी री बातां में रस-सो बरसै हो। म्हे तीनूं बूक मांड गुटकै-गुटकै पीवै हा भूरजी री बातां रो रस। भूरजी कथै हा—

''तो बाऊजी, अेकै ठौड़ चालती नौकरड़ी नैं बिना बात ई चाक लागगी ही अेकरसी। पतो नीं कोई सिकायत घाल दी ही अर कोई ऊपर उणरो तकड़ो जाणीकार हो, सो म्हांनै बैरी बदळी करा'र टिका दिया बांसवाड़ै। अबढी पजी ही बाऊजी, कदै किणरो बुरो को करचो हो नीं पण किसै भो री भुगतावण हुई ही, सांवरो जाणै! खैर, तिकड़म भिड़ा'र पूण-पावलो खरच'र बा बदळी पाछी गांव तो करा ली ही, पण बाऊजी, अब ठाह भी लागग्यो हो कै आभो खाली टोखसी बरगो ई को हुवै नीं, सोच सूं परै बत्तो ठाडो हुवै। पाछा आयां पछै सेहळै री गळाई गिंडी बण जीवणो ई सार समझ'र बोलबाला हुय लिया हा, पण मजूरी में जोड़-तोड़ बणाय'र छेती नीं पड़नै री जुगत तो जमाई राखी। पण घेर मोड़ियो जद आयो तो बाऊजी थल्ला हालग्या हा। सिंघ नै झाल्यो स्याळियो जे छोडै तो खाय, सिंघां गाबड़ सांवठी सांभी नईं संभाय। तो बाऊजी हुई आ कै जीणै सूं ई जी धापग्यो हो।

''दोपारै बारै कुरसी घाल'र बैठ्या गप मारै हा। बागवान म्हारी बात रा हंकारा देवै हा अर म्हैं म्हारा लपोसड़ा छांटै हो कै चपरासी हेलो कर दियो, 'बाबूजी, फोन।' म्हैं भाज'र फोन उठायो। जिलै रै दफ्तर सूं अठै रा इंचारज बोलै हा, 'भूरजी, बुधवार रा जयपुर सूं बडै अफसरां रो दोरो है, आपणै दफ्तर ठैर'र चैकिंग करसी अर जीमा-जूठो कर'र आगै जिलै रै दफ्तर पूगसी। बां सारू खोखा खाणा अर कंवळा खजूरां री तिस्स

मेटण री बैवस्था करणी भोत जरूरी है। म्हैं जाणूं हूं कै थांरै बस रो सौदो कोनी ओ। म्हैं काल आवूं हूं। थे पीसड़ां रो पूरो सरंजाम राख्या। पूरती री बाद में देख करस्यां।' बाऊजी, फणां-तणां हुय'र पूरो दफ्तर लागग्यो हो जाचो जचावण में। आगलै दिन इंचारज साब आ लिया हा। म्हैं बांनै पीसड़ा री भरोटी संभळा दी ही। आगलै दिन बुधवार हो, जयपुर सूं चाल्या अफसर गेलै रा दफ्तर छेकता ढाईयेक बजै-सी पूग लिया हा। म्हारा साब अर म्हे सगळा दफ्तर आळा तरधन सेवा में कमर दोवड़ी कर'र हाथ जोड़्यां खसै हा। बांरो तोरो उतरतां ई खईस बरगो लखावै हो। साथै अफसरां रा मैडम भी हा। म्हारला साब नैं अफसरां री सेवा-चाकरी में लगा आपां तो पल्लो झाल्यो मैडम रो। मैम साब रै इसारै नैं बोल्यां पैली समझ सगळी सेवा बां साम्हीं हाजर-नाजर। अणूता राजी हा मैम साब। ओ गुर हो म्हारै भेजै में कै लुगाई जद राजी हुवै तो कोई खिंख्या को हुवै नीं। बाकी घोड़ो खावो घोड़ै रै धणी नैं। जीमण रा खोखा अर खजूरी पाणी री बैवस्था साब कियां करी ही बै जाणै, बांरो काम जाणै। आपां रामजी तो मैम साब रै कारज में कमी को रैवण दी नीं। जीमा-जूठै पछै मनवार में पान रा बीड़ा आया हा। अफसर अर साब चबड़-चबड़ चाब'र नर्सरी अर इलाकै रो निरीक्षण करण रो कैयो तो दो जीपां में बांनै घुमाया। म्हारो काम बठै आछो करग्योड़ो हो। बै चालता गया, मैम साब हरियाळी देख, गाछां री पांगरत देख स्याबासी भी दी। आगै भोत बुरी हुई बाऊजी। थोड़ी दूर आगै अफसर अर बांरी घरआळी पैदल चाल्या हा। जठै बै उतर'र खड़ा हुया बठै सूं पांवडा दसेक आगै घेर-घुमेर मोटी पेडी रा दस रोहिड़ा ऊभा हा—चीकणाचट। साबणी कैयो, 'सुणो हो के? अबकै कोठी में फर्निचर बणाणो बाकी है नीं, आं रूंखां रो सखरो बणसी। आप इण सारू आंनै आदेस देवो। अफसर म्हारलै साब नैं कैयो। साब म्हनै बुलाय'र पसवाड़ै लेयग्या अर समझायो कै भूरजी, अफसर आं रोहिड़ां री लकड़ी जी में जमा ली है, सो इयां करो कै च्यार रोहिड़ा कटा'र फाटका कढा लिया अर सात-आठ दिन में जयपुर भिजवा दिया अर दो रा फाटका म्हारै घरां सीकर भी पुगा दिया। थांरै जचै तो अेकाध थे भी ले लिया। अफसर जद कैय दियो तो आपां नै हुकम तो मानणो ईज पड़सी, मजबूरी है।'

''बाऊजी, म्हारै सोरको-सो निसरग्यो हो। पगां हेटली जमीं जाणै सिरक'र अळगी निकळगी हुवै। सी-कंपो ताव-सो डील में पसरग्यो हो। म्हैं धीरै-सी बोल्यो, 'साब, जतन सूं पळ्योड़ा हरिया रूंख है, पाप लागसी।' साब कीं तीखै सुर में चिणख्या, 'पाप तो भूरजी, कद लागसी अर कद को लागै नीं, पण नटस्यां तो औ बाप पक्कांयत लागसी। रीसां बळतो भारियो जरूर बांध देसी। थे तो बस जित्तो कैयो है बित्तो करो, घणी स्याणप मत झाड़ो। ओ म्हारो आदेस है।'

''जाणो हो बाऊजी, हरियो रूंख बाढणो अर बो ई रोहिड़ो! धरम कथै है कै औ तो बामण-हत्या रो सो करम हुवै। बा बिरम-हत्या-सी म्हारै हाथां हुई ही। फाटका लकड़ा

अफसरां रै घरै पूग्या तो दो रूंखां रा फाटका म्हारै घरां भी गया हा। हां, अेक बात आछी हुई कै आपणो अेरियो हरियाळी में आखै दफ्तरां में अगीवाण बण्यो अर मैम साब म्हनै अलायदी स्याबासी अर इनाम भी दियो हो। मन में गिलाणी रो बोझो हो, रात नै सपनां में ई रोहिड़ा ओळमो देंवता दीसता हा। साची कैवूं हूं बाऊजी, म्हैं म्हारी नींद बेच'र जबरो ओजको धार लियो हो। बां कुमाणसां नैं पाप लाग्यो हो कै को लाग्यो नीं पण म्हैं सजा भुगती ही। लिछूड़ी री मां चाणचक बिना हारी-बीमारी आगलो गेलो पकड़ छोड जांवती रैयी म्हनै सूखै ठूंठ बरगो छोड'र। म्हैं भाज'र गुरांसा रा पग झाल मांड'र काळजै अमूझती बात बताई तो नाथजी महाराज म्हारै सिर पर हाथ फेर धीजो बंधायो। बां कैयो, 'हुयगी जकी तो हुयगी, कोई उपाय कोनी, बस भूरिया! हरिभजन कर अर जीयै जित्तै रूंख लगा, औ ईज प्रास्चित है। स्यात् थारी घरआळी री मुगती हुवै, उणरी आतमा सौरी हुवै। थारो आगोतर सुधरै।' सो बाऊजी, पापियां रै मूंढै राम बैठै, बा जुगत करूं हूं। लिछूड़ी री मां सूं अर बां रोहिड़ै रै रूंखां सूं भखावटै-भखावटै नितूगै रोय-रोय माफी बगसाणै सारू अरज करूं हूं। जाणू हूं, म्हैं अर म्हारा पाप माफी लायक कोनी पण रूंख लगा'र जमारो सुधारूं हूं।'' भूरजी सिसकारो-सो न्हाख धुंई में लकड़ी देवै हा अर म्हैं भी गतागम में पड़'र सोचै हो कै आ म्हांटी साच कहाणी कियां कैयी जा सकै है! कै इण साच नैं कहाणी कैय सकां हां?

◆◆

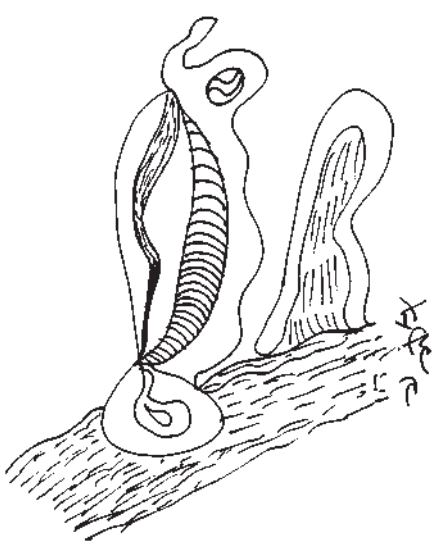

डॉ. मंगत बादल

बुरा जो देखन...

किणी सारू बुरो सोचणै या किणी रो बुरो करणै सूं साम्हीं आळै रो बुरो तो हुवै या नीं हुवै आ तो न्यारी बात है पण जिको बुरो सोचै या किणी रो बुरो करणै री तेवड़ै उण रो जरूर बुरो हुवै। नकारात्मक चिंतन दुधारी तलवार हुवै बा वार करण वाळै नै भी नुकसाण पुगावै। रहीम जी तो कैवै :

जो तोको कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वा को है तिरसूल।।

कैवण रो मतलब है कै बुराई जद पाछी आवै तो आप रै साथै ब्याज लेयनै ई जावै। बियां तो बुराई सारू स्याणा लोग पैली कैय चुक्या है कै जद आप अेक आंगळी उठायनै किणी री बुराई कानी सीध करो तो उण कानी तो अेक आंगळी ई हुवै पण आप रै खुद कानी तीन आंगळ्यां हुवै। म्हैं अठै अेक बात पूछणो चावूं कै जद औ ईज कीं करणो है तो सेर नै सवा सेर अर ईंट रो जवाब पाथर सूं देणो आद औखाणा कांई घस'र गूमड़ै माथै लगावणै सारू चाल्या? गांधीजी कैया करता कै ना तो कीं बुरो देखो, ना बुरो सुणो अर ना बुरो बोलो। इण बात पर अटल रैवणै सारू बै खुद कनै तीन बांदरां री अेक मूरती राख्या करता जिकी में अेक बांदरै आपरी आंख्यां दूजै कानां अर तीजै रा आपरै मूंडै माथै हाथ धरेड़ा हा। गांधीजी तो संत सुभाव रा मिनख हा। बां आ बात कैय तो दी पण इण सूं बडी गड़बड़ हुयगी। अै बातां अध्यात्म में तो ठीक ही पण समाज में या दुनियादारी रै धरातळ माथै इण सूं भ्रस्ट आचरण नै घणो संबळ मिल्यो। कबीर कैयग्या है :

शास्त्री कॉलोनी, रायसिंहनगर-335051 मो. 94149 89707

 ISSN : 2320-0995

कबीरा तेरी झोंपड़ी, गल कटियन के पास।
जो करे सो ई भरे, तूं क्यूं भया उदास।।

भगत या संत तो पाड़ोस सूं निरपेक्ष रैय सकै पण आम मिनख रै परिपेक्ष में आ बात कीं कम जचै। जद पाड़ोसी रो घर बळतो हुवै तो आपणो घर कितरी'क देर सलामत रैवैलो! समाज में तो आ बात भी चालै कै आप जद किणी नै पाप करतां देखो अर बरजो कोनी तो आप भी उण पाप रा भागीदार हो। 'भारतीय दंड संहिता' में तो औ भी लिखेड़ो है कै आप किणी नै अपराध करतां देख्यो है अर उण री खबर सक्षम अधिकारी तांई नीं करी तो आप भी सजा रा भागी हो। करैलो बो भरैलो! आ बात ठीक है पण किणी अेक री करणी सूं कितरा लोग दुखी हुय जावै आ बात भी सोचणआळी है। मिलावट करण वाळा घी-दूध, मसाला या बीजी खाणै-पीणै री चीजां में मिलावट करनै जणै-जणै री सेहत सूं खिलवाड़ करत्यां जावै। बै कांई भुगतैला अर कद भुगतैला आ तो भविस री बात है पण बां री करतूतां सूं जन-जन री सेहत नै जितरो नुकसाण पूगै उण रो खामियाजो कुण भरैलो? कदे कोई ईमानदार अफसर अैड़ै लोगां नै पकड़ भी लेवै तो बो बडै अफसरां नै रिस्वत देयनै छूट जावै अर जे मुकदमो भी हुयग्यो तो कानूनी प्रक्रिया इतरी लंबी है कै गवाह थक जावै अर दोसी आखिर में बेदाग छूट जावै। बेईमान मिनख कोई और गळी ढूंढ सकै। कैवत भी है कै चोर सूं गळियां कैड़ी छानी हुवै? अठै जे आप औ कैवो कै बुरो ना देखो तो कीकर पार पड़ैली? बुराई देख अपणावणी कोनी बल्कै उण रो प्रतिकार तो करणो ई चाईजै पण गांधीजी कैवै कै बुरो ना देखो। देख्यां बिना प्रतिकार कीकर हुवैलो! अेक भांत सूं ओ तो समस्या सूं पलायन हुयो। कबूतर री भांत मिनकी नै साम्हीं बैठी देखनै आंख्यां मीचणी हुयी। इण बात पर चाल'र देस आज कठै सूं कठै पूग चुक्यो है? केई दिन पैली अखबार में अेक छोटी-सी खबर छपी। खबर अमरीका री ही। पांच बरस रै बेटै आपरै बाप री पुलिस नै सिकायत करी कै उण यातायात रो नियम तोड़्यो है। जांच करीजी तो बात साची ही। इण अपराध रै कारण बाप नै सजा मिली। आपणै तो संगीन अपराध करनै भी अपराधी इण कारण छूट जावै क्यूंकै सबूत मिलै ई कोनी। सिकायत करणाळै नै डर लागै। अपराधी किस्म रा लोग आज ऊंचै पदां माथै पूग'र जनता रो धन लूट्यां जावै। आपां नै कांई है! आपां नै तो बुरो देखणो ई कोनी! करैलो बो भरैलो! भगवान स्सो कीं देखै। उण री निगाह सूं कीं छानो कोनी। उण री लाठी में आवाज कोनी हुवै पण लागै जद आगलो-लारलो सगळो हिसाब चुकतो कर देवै। आं बातां आपणै समाज नै कितरो स्वारथी अर निकम्मो बणा दियो। इण रो औ ईज तो मतलब हुयो कै समाज रै नियमां अर मरजाद नै ताक माथै धर कोई कीं करो आपरै मन री मरजी सूं। सजा तो आखिर में भगवान उणनै दे ई देवैलो। पछै आपां क्यूं बुरा बणां! कदे-कदे तो म्हनै लागै कै कीं चालाक लोगां रळ'र अैड़ा ब्रह्म वाक्य अर औखाणा घड़-घड़ चला दिया कै

लोग बांरै कुड़कै में फंसग्या। समाज में घणा ई लोग इस्या हुवै जिका आपरी आखी जिंदगी में कुकरम करता रैवै अर मौज मारै। बांनै तो कोई सजा मिली कोनी। इण सारू कैय देवै अगोतर में मिलैली तो अगोतर कुण देख्यो है? आ जद पूछां तो जवाब मिलै, शास्त्रां में लिखेड़ो है। तो सवाल उठै शास्त्र कुण लिख्या है? बांनै लिखणआळा बै ई चालाक लोग तो कोनी। अैड़ी बात पूछणियां या कैवणियां नै लोग नास्तिक कैवैला अर शास्त्र विरोधी बतावैला। अठै अेक बात आ भी है कै समाज में रैवण रा भी कीं नियम-कायदा हुंवता हुवैला। बां माथै नीं चाल्यां तो जंगळ-राज आवैलो। मौको लागतां ई तकड़ो कमजोर नै गड़प कर जावैलो। आपां देखां कै समाज रा कायदा-कानून नीं मानणै रै कारण आज मिनख निजी रूप सूं लगोलग पतन कानी जावै। बडै-बडै स्हैरां में गुंडा, लोगां सूं हफ्ता वसूली करै। कोई बांनै रोकणै री कोसिस करै तो बै उणनै मार देवै या अैड़ी सजा देवै कै आगै सूं बीजो मिनख हिम्मत ई कोनी करै। सरे आम बजार में गुंडा हत्या कर देवै पण लोग डरता गवाही देणै सारू त्यार कोनी हुवै। बांरा हाथ इतरा लंबा हुवै कै पुलिस अर प्रसासन सूं डरै ई कोनी। बै जाणै कै समाज इण मामलै में जद तांई अेकजुट कोनी हुवै बांनै कोई खतरो कोनी। इण कारण ई असामाजिक तत्त्वां री ताकत अर हिम्मत बध्यां जावै क्यूंकै बै अेकजुट है। ऊपर सूं हेठां तांई अेक ई सांकळ री कड़ियां है। इण नै आप समाज कैवोला या जंगळ-राज! कितरै अचंभै री बात है कै आपरै स्वारथां नै पूरा करण सारू गुंडा तत्त्व तो अेक हुय सकै पण सरीफ मिनख कोनी हुवै। जंगळ में में तो जिनावर भूखो हुवै या खुद नै खतरै में देखै जद ई हमलो करै पण मिनख तो कद कांई कर देवै इण बात रो बेरो ई कोनी लागै। गुंडा लोग समाज में रैवणै रै नियम-कायदां नै आपरी जूती माथै राखै। झूठा, मक्कार, चोर, उचक्का धड़ल्लै सूं चोरी कर पछै धनबळ सूं इण कारण ई छूट जावै कै बांरो मुकाबलो करणआळा किणी लफड़ै में कोनी पड़णा चावै। आज असमाजिक तत्त्वां नै कानून रो डर लागै ई कोनी। समाज में आदर मान हासल करणै सारू अै लोग चंदो-चिट्ठो देयनै समाज रा मुखिया बण बैठै तो आम मिनख कांई सोचैलो। बो तो रिस्वत, भ्रस्टाचार अर अपराध करम नै भी इज्जतआळा काम मानैलो। विचार करण री बात है कै अैड़ै मामलां में भी लोग अेक क्यूं कोनी हुवै! जिको कीं बुरो दीसै उणनै दूर नईं करणै री कोसिस तो नामरदी है। म्हारै शास्त्रां अर लोक रो तो कैवणो है कै बुराई नै देखतां ई सांप रै सिर री भांत उणनै मसळ देणो चाहीजै। बुरै नै बुराई करतां देख उण नै कीं नीं कैवणो या मूंडो फेर अणदेख्यो करणो उण बुराई नै बढावो देणो है। शास्त्र तो औ भी कैवै कै अैड़ै पाप नै देख'र जिको मिनख मून रैवै बो भी उण पाप रो उतरो ई भागीदार हुवै जितरो उण करम नै करणआळो। सुतरमुरग भी तो इणी'ज भांत करै। खुद पर जद संकट आवै तो रेत में सिर घुसा लेवै। साम्हीं मिनकी नै देख कबूतर आंख्यां मीच लेवै। मिनख भी जे इण भांत करण लागग्यो तो उणमें अर सुतरमुरग कै कबूतर में कांई फरक रैय

 ISSN : 2320-0995

जावैलो! दरअसल अैड़ा लोग अकरमण्य अर लकीर रा फकीर हुवै। बै सोचै बां खातर कोई दूसरो आयनै स्सो कीं कर जावैलो। अैड़ै लोगां रा मानदंड भी दो भांत रा हुवै, काम पड़्यां कीं और है काम सर्‌यां कीं और। म्हैं केई अैड़ा लोग देख्या है जिका थोड़ो-सो संकट आवतां ई मिंदर कानी भाजै। भला आदमी भगवान आपनै दो-दो हाथ-पग दिया है। दिमाग दियो है। हिम्मत सूं मुकाबलो करो! पण नईं, मिन्दर कानी भाजैला। काम नीं हुवै तो भगवान नै दोस देवैला। दरअसल आंरो पूजा-पाठ भी अेक भांत सूं सौदाबाजी हुवै। केई अैड़ा जड़ मिनख हुवै कै बात रै मरम नै तो समझै कोनी अर गधेड़ै री पूंछ पकड़्यां राखै अर लातां खाबो करै। अेकर कोई महात्मा उपदेस देवै हा। उणां बतायो कै हरेक जीव में भगवान हुवै। अेक मूरख रै आ बात जचगी। बो अेक दिन कठैई जावै हो साम्हीं सूं कोई बिगड़ेड़ो हाथी आवै हो। उणनै अेक मिनख बतायो कै ओ रास्तो छोड़द्यो अर दूर हट जाओ। साम्हीं सूं अेक बिगड़ैल हाथी आवण लागर्‌यो है। उण पडू़त्तर दियो, ठीक है हाथी भगवान आवै। किण बात रो डर है ? इतरै में हाथी आयग्यो अर उण मिनख नै सूंड सूं उठाय'र दूर फेंक दियो। घणी चोटां आई। बो पाछो जायनै महात्मा सूं कैवण लाग्यो कै बांरो उपदेस झूठो है। महात्मा उण सूं पूछ्यो कै कांई थांनै किणी चेतायो कोनी कै हाथी आवै? उण कैयो, ''अेक मिनख बतायो तो हो पण उणरी बात म्हैं मानी कोनी। सुणनै महात्मा हांस'र बोल्या, ''जद थे मिनख भगवान री बात ना मान हाथी भगवान री मानोला तो थांरै सरीखां साथै इणी'ज भांत हुवैलो। मिनखां सूं धोखो कर, लूट-पाट कर भगवान रै भोग लगावणियां, मिंदर में जायनै चढावो चढाणियां मन में सोचै कै बांरा पाप धुपग्या। मिंदरां में चढावो अर तीरथां माथै भीड़ इणीज कारण घणी रैवण लागगी। लोग सोचै जियां अफसरां नै रिस्वत देणै सूं स्सो-कीं माफ हुय जावै उणीज भांत गंगा में नहावणै सूं या मिंदर में चढावो चढाणै सूं पाप धुप जावैला। भगवान नै भी लोगां रिस्वतखोर समझ राख्यो है। दरअसल अै लोग अपराध-बोध सूं दबेड़ा हुवै। बां रै मन में डर हुवै पिछतावो कोनी।

मिनख नै बुराई रै खिलाफ अेक साथै केई मोरचां माथै लड़णो हुवै। पैलो तो औ ईज कै बो खुद नै बचायां राखै। रिस्वतखोरी, काळा बाजारी, जूओ, दायजो मांगणो, बेहिसाब ब्याज वसूली आद अैड़ी बुराइयां है जिकी छूत रै रोगां री भांत है। लाग्यां पछै घणी अबखाई सूं छूटै। अै बुराइयां भ्रस्टाचार निरोधक विभाग में भी है। बठै भी मिनख ई है। मिनकी जद दूध री रुखाळी करैली तो अंजाम आपणै सूं छानो कोनी। रहीम जी कैयो भी है :

संगति सुमति न पावहि, पड़े कुमति के धंध।
राखो मेल्हि कपूर में, हींग न होत सुगंध।।

बुराई तो बुराई है। उणनै नीं देख आंख मीच्यां बा दूर कोनी हुवै। उणरो मुकाबलो तो करणो ई पड़ैलो वरना बा बधती जावैली। अठै फैसलो आपां खुद नै करणो है। अेकर म्हैं कठैई पढ्यो कै जहांगीर रै राज में अेक चोर पकड़ीज्यो। जहांगीर आदेस दियो कै सरेबाजार चौक में खड़्यो कर इण रा हाथ काट दिया जावै। उण बगत उणरै दरबार में कोई विदेसी मेहमान आयेड़ो हो। उण कैयो कै इण भांत तो आपरै राज में अपाहिजां री अेक फौज खड़ी हुय जावैली। अैड़ा लोग तो पड़खाऊ ई हुवैला। जहांगीर आपरै अेक दरबारी नै हुकम करयो कै बो उण मेहमान नै च्यार दिनां सारू गांवां अर स्हैरां में घुमायनै ल्यावै। जहांगीर रै हुकम सूं जद बो उण मेहमान नै च्यार दिनां सारू घुमाय'र पाछो दरबार में लेयनै आयो तो जहांगीर उणसूं पूछ्यो कै उणनै जनता में कितरा'क अपाहिज दिख्या। इण बात माथै विदेसी मेहमान जवाब दियो कै अेक भी कोनी दीख्यो। मेहमान रै मूंडै सूं आ बात सुण'र जहांगीर पड़ूत्तर दियो कै इण रो मतलब कानून रो डर है। कानून रो मतलब सिरफ सजा देणो ई कोनी हुवै बल्कै मिनख रो सुधार करणो भी हुवै, न्याव सिरफ करणो ई नईं बल्कै हुंवतो भी दीखणो चाहीजै, जद ई लोगां में उण रो डर बैठैलो। इण पुराणी घटणा रो वरतमान कानून अर वैवस्था सूं मेळ करनै देखल्यो। आपणै सास्त्रां में 'षठे शाठ्येन समाचरेत' भी कैयो गयो है। ओ भी तो नईं भूलणो चाहीजै। आपां प्रजातंत्र री नकल कर आपणै देस में वैवस्था तो लागू कर दी पण आथूणै देसां में जठै प्रजातंत्र है बठै कानून कितरी सख्ती सूं लागू हुवै ओ भी तो देखणो चाईजै।

राजनीती में आज कांई होवण लागग्यो है म्हनै घणो बतावणै री जरूरत कोनी। राजनीती में जितरो भ्रस्टाचार है उतरो बीजी जग्यां स्यात ई हुवै पण लोगां आंख्यां मीच राखी है। बै बुरो कोनी देखणो चावै। कानून री आंख्यां माथै तो पाटी बांधेड़ी हुवै ई है। उणरै तो कानां में सुणाणो पड़ै। जनता भी भ्रस्टाचारी नेतावां नै सबक कोनी सिखावै बल्कै उलटी उण री जी-हजूरी और करै। इण सूं बै खुद नै सही मानण लाग जावै। लोग आ बात कोनी सोचै कै आज जिको पईसा देयनै बोट लेवै बो आगै चाल'र भ्रस्टाचार क्यूं कोनी करैलो ? पुराणै जमानै में जद कोई बुरै धंधै सूं धन कमा लिया करतो तो लोग उण सूं रिस्तेदारी करणै सूं पैली सौ बर सोच्या करता। आज तो धन होणो चाईजै बो कैड़ै साधनां सूं आयो है इण बात नै कोई कोनी देखै। बुराई रो अंत कदे चोखो कोनी हुवै। आ बात जाणतां थकां भी लोग आंख्यां मीच्यां राखै। सूतै नै तो जगा भी देवां पण जागतै नै कुण जगा सकै! अैड़ै लोगां नै पुलस अर कानून रै अलावा समाज रो भी कीं डर होणो चाईजै। पुलस, प्रसासन अर नेता मौको लाधतां ई तीन्यूं साथै रळनै जनता नै बेवकूफ बणावै। दरअसल इण रो अेक कारण तो ओ भी है कै आज निजू स्वतंत्रता रै ओळावै समाज रो मिनख पर कीं इधकार ई कोनी रैयो।

आजकाल अेक और प्रवृत्ति देखणै में आवै जिकी घणी खतरनाक है। रिसाणी भीड़, कानून री परवाह ना कर कदे-कदे अपराधी नै पकड़ सामूहिक रूप सूं कूट'र उणरी

हत्या कर देवै। इण रो सीधो सो अेक मतलब औ ईज है कै जनता नै कानून माथै भरोसो कोनी रैयो। मौजूदा सरकारां, कानून वैवस्था अर नेतावां नै आ अेक भांत री चेतावणी है। पुराणै जमानै में मिनख माथै उणरै समाज रो पूरो नियंत्रण हुया करतो। मिनख समाज सूं डरया करतो। इण कारण बो कोई भी अैड़ो समाज विरोधी काम करणै सूं डरतो जिकै सूं उणनै समाज री अवमानना करणै री सजा भुगतणी पड़ै। समाज री नैतिकता रा नियम तो करड़ा हा पण साथै ई लोगां में मिनखपणो भी हो। समाज री पंचायत जद किणी रो होको पाणी बंद कर दिया करती तो उणनै दुबारा समाज में रळणै सारू अेडी-चोटी रो जोर लगाणो पड़तो। आज तो हरेक मिनख समाज नै आपरी जूती माथै राखै। मिनख निजी रूप सूं चायै स्वतंत्र हुयग्यो पण समाजिक समरसता में दरार पड़गी अर आ खाई लगोलग चौड़ी हुंवती जावै। इण कारण ई मिनख रै चरित्र रो पतन हुयो है। पुराणै जमानै में समाज मिनख रै चरित्र री रुखाळी करया करतो पण आज बै मापदंड बदळग्या। गांवां में सामाजिक समरसता कीं जादा हुया करती पण आज तो बठै भी कोई कूवै में भांग घोळग्यो। आज किणी नै समझाणै री कोसिस करो तो बो आपनै जूनै विचारां रो बतायनै आपरी मखौल उडावैलो अर पच्छम आळै देसां रा उदाहरण देवैलो। अैड़ा लोग कदे बां लोगां री नैतिकता कोनी देखै। देस अर कौम सारू बांरो लगाव अर त्याग कोनी देखै। बै ओ भी कोनी देखै कै बठै रा लोग आपरै देस रै कानून री कितरी इज्जत करै। जद कै आपणै अठै कानून तोड़णआळा बडा लोग ई है। छोटा तो बांरी नकल करै—यथा राजा तथा प्रजा।

आज पुलिस, प्रशासन या नेता सिरफ जन आंदोलन सूं डरै वरना नैतिकता नै तो बां तार-तार कर मे'ली है। जन आंदोलनां सूं भी नेता लोग आप-आपरा स्वारथ देखनै जुड़ै अर पूरा होवतां ई आंदोलन सूं किनारो कर लेवै। लोग खुद नै ठगीजेड़ा मैसूस करै पण बांरो कीं जोर भी तो कोनी चालै। आप इतिहास उठायनै देखल्यो—आजादी पछै रै घणखराक जन आंदोलनां रो औ ईज हाल हुयो है। म्हैं आ कोनी कैवूं कै सगळा नेता या अफसर बेईमान है पण अठै ईमानदार है भी कितरा'क ? जिका है भी बै बेईमानां सूं डरता बोलै कोनी। अठै आप कैंवता रैवो, करैलो बो ई भरैलो। उण तो आपरो काम काढनै जनता सूं किनारो कर लियो। भरो अब जनता। आज आप सर्वेक्षण करनै देखल्यो आम मिनख बेईमान मिलैलो। रेल या बस री टिकट नीं लेणी या जठै भी मौको लाधै, दो-च्यार रुपियां सारू भी बेईमानी कर लेणी आज रै मिनख रो चरित्र बण चुक्यो है। इण रो विरोध हुवणो चाईजै पण कुण करै! आज मिनख अर समाज नै इण थितियां माथै विचार करणो चाईजै अर नैतिकता कानी ध्यान देणो चाईजै जद ई कोई देस तरक्की कर सकैलो। संतां, महात्मावां अर महापुरुसां जिकी बातां कैयी है बां माथै संदरभ देखनै विचार करणो जरूरी है, आंधी नकल करयां पार कोनी पड़णी।

◆◆

डॉ. चेतन स्वामी

दूहा-सोरठा छंद मांय राजस्थानी वीर काव्य

ऋषिभिर-बहुधा गीतं, छन्दोभिर-विविधैः प्रथक।
ब्रह्मसूत्र-पदैश-चैव, हेतुमद्भिर्-विनिश्चितैः।।

गीता अध्याय 13/4

रिसी मंतरदिस्ठा होवै। बांनै ई मंतरां रै रचाव सारू घणी भांत रा छंदां री जरूत पड़ी। रिसियां अनुष्टुप, त्रिष्टुप, बृहती, जगती, अति जगती आद छंदां मांय मंतरां री रचना करी अर ब्रह्म उपदेस दिन्हो। छंद री परिभासा होवै—'छादनात् छन्दः'। सबदां री 'छावण' करणी। अध्यात्म री दीठ सूं ओपमावान सबदां सूं परमात्मा रै सरूप नै छावणो, सजावणो। छंद भगवान रा रूपाळा बस्तर होवै। रामायण रो अरथ—रामजी रो घर, चौपाई रो अरथ—रामजी री चारपाई, दूहो अरथाव पीवण रो दूध। गायत्री मंतर री सिरजणा करण सूं ई विस्वामित्र जी आखै संसार रा मिंतर बाज्या। अै इतरी बातां इण वास्तै कै काव्य सारू छंद री घणी मैमा है।

छंद रै लेखै आपणी आ पवीत मातभौम घणी सिरै रैयी है, अठै रो काव्य इतरा छंदां मांय कथीज्यो, कै उणरी रीत नै समझण सारू कई लक्षण ग्रंथां री रचना करणी पड़ी। राजस्थानी रै रीति ग्रंथ 'रघुनाथ रूपक' मांय कवि 'मंछाराम' 72 छंदां री सूची दिन्ही है, पण दूहा रा 4 भेद, छप्पय रा 4 भेद, कुंडळिया रा 5 भेद, नीसाणी रा 12 भेद, दवावैत रा 4 भेद अर वचनिका री 14 रीतां नै रळायां तो 114 भांत रा छंद होवै। अेकला डिंगळ गीत ई सौ भांत रै छंदां मांय रच्योड़ा है। इसड़ी मुकळायत किणी बीजी भासा कनै कठै? राजस्थानी रै 'रघुनाथ रूपक' अर 'रघुवर जस

काळू बास, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान मो. 9461037562

 ISSN : 2320-0995

प्रकास' री ज्यूं ई राजस्थानी री सागी बैन गुजराती मांय 'रण पिंगळ' मोटो रीति ग्रंथ है जिण मांय छंदां रा भेद अर रीत बखाण्योड़ी है। इण लूंठै छंद ग्रंथ रा तीन भाग है अर इणरै तीजै खंड मांय डिंगळ रै छंदां रा उदाहरण दियोड़ा है। कवि जिको कीं कैय रैयो है, उण तथ नै बारीकी सूं ओपता-मन कैवण अर कथण री परिपाटी री पालणा करण रो खिसब छंद सूं करीजै। छंद नै बरततां थकां भी कवि आपरी छंद रचण री लकब माथै कोई गीरबो नीं किन्हो अर नीं मोहित होया, तुलसी जैड़ा अमर कवि री विनम्रता अर लुळताऊपणो अंजसजोग है :

भाषाबद्ध करबि मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जे होई।।
जरा कुछ बुधि-विवेक बल मेरे। तस कहि हौं हिय हरि के प्रेरे।।

डिंगळ रा कवियां ई आपरै हिवड़ै री सूझना सूं ई अमर साहित्य री रचना करी। राजस्थानी रो प्रभूत मात्रा मांय रच्योड़ो वीर साहित्य डिंगळ गीतां मांय रच्योड़ो है। हिन्दी रो वीरगाथा काळ राजस्थानी रै डिंगळ साहित्य रो रिणी है। ईस्वी सन् 1250 सूं 1750 लग रो बगत डिंगळ काळ मानीजै, इण समय घणै उम्दा साहित्य री रचणा होई। इण साहित्य मांय विवधता रैयी। भगति, वीर, सिणगार अर लौकिक काव्य रै रूप में अेक मोटो भाखर ऊभो करीज्यो, जिको जूना पोथी भंडारां मांय आज ई आपरै उद्धार री बाट जोय रैयो है। जूनी राजस्थानी मांय जैन साहित्य रै रूप ढाळां, गीत, चौपाई, संधी, स्तवन, फागू, वेलि अर सज्झाय जैड़ो साहित्य, तो चारणी साहित्य रासो, वेलि, रूपक, प्रकास, विलास, झमाल, साको, गुण आद रूप साम्हीं आयो। हजारां वीर गीत फुटकर साहित्य रै रूप रचीज्या अर अंग्रेजां रै अठै छैकड़लै प्रवास काळ लग रचीजता रैया। भगती साहित्य रै लेखै रास, चरित्र, सार, प्रकास, गुण, स्तुति, अणभै वाणी अर फुटकर भगती गीतां रै रूप मोटो साहित्य जनोपयोगी बण्यो। सागै-सागै लोकरंजण सारू लोक साहित्य ई गीत, पवाड़ा, गाथा, बातां रै रूप कम नीं रचीज्यो। सतरवैं सईकै री सरुआत मांय इण विविध छंदोमयी साहित्य नै समझण सारू 'पिंगळ सिरोमणि' छंद-सास्तर री रचणा चूंडा दधवाड़िया करी।

भारतीय संस्कृति रै मान-मोलां मांय धरा-धरम री रिछ्या अेक मोटो आदर्स है, धीरता, वीरता अर गंभीरता अठै रो जातीय गुण मानीज्यो है। इणी वास्तै रंगरूड़ै रजथान मांय वीर रो स्तवन बेसी होयो। इयां मानीजतो कै अेक सूरवीर मांय दूजा मानवीय गुण पण सहजां ई मौजूद रैवै। वीर काव्य नै राष्ट्रीय गीरबै रो काव्य कैयीज्यो। औ हर किणनै ई अचंभै मांय नाख सकै कै वीर काव्य रचणियां कवियां मांय उमंग री गाढ कितरै ऊंचै दरजै री रैयी होवैला, कै नूंवो छंद-सास्तर ई साम्हों लाय दिन्हो। फगत अेक वीर गीत सारू सौ सूं बत्ती, अेक-अेक सूं आगळा रमणीय छंद। अैड़ी मिसाल अवर किणी साहित्य मांय नीं लाधै। राजस्थानी वीर काव्य भाव अर संदेस री दीठ सूं तो सिरै काव्य है ई पण

कलात्मक रचाव अर छंद वैविध्य रै कारण सूं ई घण महताऊ है। राजस्थानी री इण अणमोल धरोड़ रो दोवड़ो मैतब है। अैकै कानी वीर गीत इतियास रा जीवंत अर प्रमाणिक स्रोत है, तो बीजै कानी काव्य कला री दीठ सूं अेक काळ विसेख रै मनोभावां नै परगासै। राजस्थानी वीर काव्य री केई खासियतां है जिण मांय अेक तो आ, कै इण मांय करीजी वीर प्रशस्ति किणी खास राजा, सेनापति कै अधपति री नीं है, जिको जुध मांय जूझ्यो अर आपरो किरतब देखाळ्यो, बो चावै साधारण मिनख ई क्यूं नीं होवै, कवि उणरै गुणां री परख करण मांय लारै नीं सिरक्यो। दूजी खासियत आं गीतां रै रचारां री ही कै बै वीरां रै गुणां रो गान, आंख्यां देख्यै साच रै रूप ई करता। कवि खुद जुध मांय हाजर रैय'र भड़ां रो जोधारोपणो जोवता। मौको पड़्यां अै कवि खुद ई रीठ बजाड़ण मांय पाछ नीं राखता। कवि असाधारण व्यक्तित्व रा धणी होवता। राज अर समाज दोवां मांय बांरो अणूतो ई सनमान हो। वीर काव्य नै रचण मांय आगीवाणी पांत चारणी कवियां री रैयी। राजस्थानी वीर काव्य रचण री हतौटी नै बां अेक परंपरा रै रूप मांय अंगेजी। इण साहित्य री आपरी अेक त्रिपुटी ही। चतर चारण कवि, डिंगळ जैड़ी ओजपूरण भासा अर ओपता छंद। तीनूं रळ्यां पछै सलूणा गीतां री रचना होवती। ऊंचै दरजै री विद्वता आं कवियां मांय नैसर्गिक रूप सूं मौजूद ही अर पछै पारम्परिक घरू अभ्यास बांरै खिसब नै ओजूं डिघाई बगसतो। वीर साहित्य रै रचारां सारू डॉ. रामप्रसाद दाधीच री आ उकत ठीक ई है—बै कैवै, ''डिंगळ रा मध्यकालीण कवि आपरी ओजस्वी वाणी मांय, जीवण रो बिगाड़ करण वाळी सगतियां नै अर संस्कृति रा दुस्मियां नै ललकार दिन्ही है अर दीन-हीण मानवता नै संजीवणी बगसी है। जात, धरम अर देस सारू माथो देवण वाळा नरां-भड़ां री कीरत रा अमर गीत गाया है।'' वीर काव्य मांय राजस्थान रै अेक विसेख काळ री सांस्कृतिक, सामाजिक अर राजनीतिक पिछाण पड़तख है। वीर काव्य रचण री परंपरा कोई छह सौ सूं बेसी बरसां लग चाली। नरोत्तम दास स्वामी कैवै, ''डिंगळ गीतां री गिणत हजारां मांय है। राजस्थान मांय स्यात ई इस्यो वीर होसी, जिणरी वीरता माथै अेक आधो गीत नीं बण्यो होवै। हजारूं वीरां री चितार नै आं गीतां अमर बणाई राखी।''

राजस्थान री वीर संस्कृति री पिछाण आखै संसार लग पुगावण मांय इण साहित्य रो लूंठो जोगदान है। जीवण मांय जरूरी अर अमिट छाप छोडणवाळा कितरा ई मान-मोल इण साहित्य सूं पोखता पावता रैया। धरा-धरम री आण अर उणरी रुखाळ खातर प्राण होमण नै त्यार रैवण रो संदेस देवतो औ साहित्य इण राष्ट्र री छवि नै उजाळण रो काम करै। वीर भाव रा आं गीतां री ओपमा श्रीमद्भगवद्गीता सूं करीजी है। बीकानेर रा पृथ्वीराज राठौड़ री मैमां करतां कवि कैवै :

पीथळ खित खत्री ध्रम पाळग
गीता जेम तुहाळा गीत

इण वीर साहित्य मांय गुरदै रै डील प्राण फूंकण री चेतणा ही। निरास वीर मांय आस बपरावण री ताकत ही, आसंग तूट्योड़ै मांय आसंग बपरावण री सगती ही। वीर काव्य सूं उमंग जगावण रा घणा ई प्रवाद प्रचलित है। आंनै कोई अणूती उकत कैवै तो बो इण धरा अर इणरै सपूत रै मान-मुरतब सूं अजाण है।

डिंगळ गीत परंपरा अेक लांबै बगत तांई पनपती रैयी, इण वास्तै उणरा कायदा ई रचीजता रैया। दूजै साहित्य मांय जिका कायदा बरतीजै, बीं रो सनमन रचण लग ई रैवै, पण डिंगळ साहित्य नै बांचण सारू ई अेक खास लकब, गळै मांय ओज, फींफरां मांय दीरघ सांस अर कैवण री हिम्मत अर उछाव री दरकार ही। लय, पंगत, छंद रा द्वाला सूं इण कविताई री ओळख होवती। गीत आखै संसार मांय गाईजण री विधा है, पण डिंगळ गीत अेक खास सैली सूं कैवण री विधा है। हर कोई आं छंदां रो उच्चारण कर लेवै, इसड़ो मगदूर कठै! इण खास गुण री जाच नीं होवण रै कारण आज औ उत्तम साहित्य अेक लूंठी उपेक्षा रो सिकार है। इणनै बांचण अर रचण सारू अेक मोटी चुणौती झेलणी पड़ै। जठै छंद सौ भांत रा है, बठै इणरै उच्चारण अर लय रा ई मृग झंप, ढोल, जंघखोड़ो, दोढो, सतखणो, त्रिपंखो, घड़उथळ, विधानीक, चौस, घण कंठ, दुमेळो, अमेळो, अठतालो, अहिबंध, त्रिमेळ, पालवणी, वसंत रमणी, जयवंत जैड़ा छंदगीत है। डिंगळ गीतां नै रूपक कैवण री परंपरा स्यात इणी वास्तै ही। रूपक रो अरथ होवै—सोभा, प्रशंसा। डिंगळ गीतां री रचना सारू जथावां रो ई घणो ध्यान राखणो पड़तो। 21 भांत री जथावां ही जियां—विधानीक, सर, विसर, वरण, अहिगत, आद, अताण, सुध, इधक, सम, नून आद। जथावां रो अेक नांव माखी रीति, पण हो।

छंद री ज्यूं, डिंगळ काव्य मांय 'वैण सगाई' रो ध्यान राखणो ई घणो जरूरी तथ हो। अेक भांत सूं औ राजस्थानी रो अनुप्रास अलंकार है। वैण सगाई रो सीधो-सरल अरथ होवै—आखरां रो आपसी मेळ। इण मेळ सूं काव्य मांय ओपमा, निखार, लावण्य जाम जावतो। राजस्थानी काव्य मांय ओ अेक सुभ अलंकार मानीजै। वैण सगाई रै वरत्यां, दध आखर ई कीं बिगाड़ नीं कर सकै। दोस रो नास होय जावै।

'रघुनाथ रूपक' रा रचारा कवि मंछाराम वैण सगाई सारू कैवै :

वयण सगाई वेश, मिल्यां सांच दोसण मिटै।
किणयक समै कवेस, थपियो सगपण ऊथपै।।

वीर रसावतार सूर्यमल्ल मीसण री पण इण पेटै धारणा ही :

वैण सगाई वाळीयां, पेखीजै रस पोस।
वीर हुतासण बोल में, दीसै हेक न दोस।।

वैण सगाई रा ई तीन भेद होवै, जियां—सबद वैण सगाई, वर्ण वैण सगाई अर अखरोट मित्र वैण सगाई। सबद वैण सगाई रा ई तीन भेद कहीज्या है—आदि मेळ, मध्य

मेळ अर अंत मेळ। वर्ण वैण सगाई रा पांच भेद है—घण उत्तम, उत्तम, मध्यम वर्ण, अधम वर्ण अर अधमाअधम वर्ण। इणी भांत अखरोट मित्र वैण सगाई रा ई तीन भेद—अधिक अखरोट, सम अखरोट अर न्यून अखरोट है।

डिंगळ कवि नै आपरै काव्य नै दोसां सूं बचावणो होवतो। छंद रचना मांय—अंध दोस, छबकाळ दोस, हीण दोस, निनंग दोस, पांगळो दोस, जात विरोध दोस, अपस दोस, नाळच्छेद दोस, पखतूट दोस अर बहरो दोस नांव रा दस दोस गिणीजै।

जूनी राजस्थानी मांय भलांई छंदां री मोकळायत है, पण बेसी साहित्य दूहा-सोरठा, झूलणा, कुंडळिया, नीसाणी, कवित्त (छप्पय) जियांकला छंदां मांय ई रचीज्यो। इण मांय दूहा-सोरठा मांय बेसी परिमाण मांय साहित्य रचना होई अर ओजूं ई होय रैयी है। पछै प्राकृत मांय गाहा अर उणसूं आगै अपभ्रंश रो छंद दोहा ही राजस्थानी दूहै रूप घण चावो होयो। नरोत्तमदास जी स्वामी रो मानणो है, ''राजस्थानी नै दूहो अपभ्रंश सूं बपौती मांय मिल्यो। अपभ्रंश काळ रै छैकड़ जावतां औ छंद साधारण जनता अर विद्वत समाज दोवां मांय सरीसो चावो हो।'' दूहा छंद मांय अणूतो ई साहित्य रचीज्यो, जिणरी पूरी रुखाळ ई नीं होय सकी है। नैनो छंद है—कंठा होवण रै कारण इणरी जात्रा खासी लांबी चाली। अणपढ अर विद्वान दोवां मांय अेक जैड़ो चावो इण वास्तै रैयो कै किणी बात रो पुख्ता दाखलो कै सम्पुष्टि करण खातर हर कोई इणरो उच्चारण करतो रैयो है। राजस्थानी मांय इण छंद रो घणो आघमान होयो। घणकरा रसां मांय , जस जोगै साहित्य री रचना इण छंद मांय होयी। सिणगार, भगती अर वीर साहित्य इण छंद नै रुचि सूं अपणायो।

डिंगळ रा बीजा छंद जठै कीं दोरा है, वठै दूहो अणपढ सूं अणपढ मानवी रै सोराई सूं समझ मांय आवणवाळो छंद है। फगत च्यार ई चरण मांय दूहो घणी प्रभावी बात नै कथण मांय सखम है। राजस्थानी रा जूना कवियां, बीजा चावै किणी छंदां मांय रचनावां करी, पण कीं उम्दा साहित्य दूहा-सोरठा मांय जरूर कथ्यो। दूहै रै चावैपण नै हरेक कवि भली-भांत जाणतो। औ लोगां रो कंठहार हो।

भलांई दूहो अेक नैनो छंद है, पण इणरो भी आपरो अेक छंद विधान है अर कीं नेम-कायदा है। सिणगार अर लोककाव्य मांय कीं स्वतंत्र ग्रंथां री रचना फगत दूहा छंद मांय होयी। केई कवियां इण छंद मांय सतसइयां री रचना करी। दूहा छंद मांय रच्योड़ो 'ढोला मारू रा दूहा' घणो लोकप्रिय काव्य रैयो है। जूनी बातां मांय ई गद्य नै ओपमा देवण वास्तै बिचाळै-बिचाळै दूहा दिरीज्या है। थोड़ै आखरां मांय पूरसल बात कैवण रै गुण कारण भगतीकाळ रा घणकरा कवियां आपरो साहित्य इण मांय रच्यो, आगै रीतिकाळ रा कवि ई आपरै सिणगार साहित्य नै इण छंद मांय घण कोडां मांड्यो। राजस्थान री देस राग मांड मांय तो दूहा ही गाईजै। कैयो जावै कै अपभ्रंश काळ मांय सिद्ध सरहपा सबसूं पैली इणरो प्रयोग आपरै काव्य मांय करयो। पछै राजस्थानी मांय आवतां आ परंपरा घणी डिघाई

नै हासल करी। लोक मांय इण्रो वरतारो घणो सैंठो रैयो है। उतराधै–आथूणै राजस्थान मांय बूढी–बडेरियां बीन (दूल्है) रै ग्यान री परख उण सूं दूहा सुणनै ईज करती। आसंग हारयोड़ै वीर नै भी पाछो जुध मांय जावण अर जूझण री प्रेरणा दूहां सुण्यां ई मिलती। दूहो राड़ कराय देंवतो तो दूहो जुगां री राड़ मेट मेळ कराय देंवतो। दूहै मांय सरावणा होय जावती तो दूहो विसरावण मांय ई आगैड़ी हो। दूहै मांय दिरीजी अमीणी घणी सालती। दूहो अेक कीमिया छंद रैयो है, जिणरी ताकत घणी असरदार कही जा सकै।

दूहै रै उलटो रूप सोरठो होवै। दूहै रो छैकड़लो चरण पैली अर पैलड़ो चरण छैकड़ मांय लेवण सूं सोरठो बण जावै।

राजस्थानी मांय दूहै रा च्यार भेद मान्या जावै।

दूहो : जिणरै पैलै अर तीजै चरण मांय तेरह–तेरह अर दूजै नै चौथै चरण मांय इग्यारह–इग्यारह मात्रावां होवै। औ मात्रिक छंद है।

सोरठो : सोरठै री मात्रावां ज्यूं ऊपर बतायो, दूहै सूं उलटी होवै, अरथात इणरै पैलै अर तीजै चरण मांय इग्यारह–इग्यारह मात्रावां अर दूजै अर चौथै चरण मांय तेरह–तेरह मात्रावां होवै। राजस्थानी मांय यूं तो जूना सैंग कवियां दूहा–सोरठा रच्या ई है, पण सोरठां रै लिखारां मांय राजिया (कृपाराम बारठ), किसनिया, बींजरा, नाथिया, भैरिया, मोतिया, चकरिया, नागजी, जेठवा रा सोरठा घणा नामी रैया अर जण–जण रा कंठहार बण्या।

अंतमेळ दूहो (बडो दूहो) : इणरै पैलै अर चौथै चरण मांय इग्यारह–इग्यारह अर दूजै अर तीजै चरण मांय तेरह–तेरह मात्रावां होवै। वीर साहित्य मांय इण बडै दूहै रो बरतारो बेसी रैयो।

तूंबेरी दूहो (मध्य मेळ दूहो) : पैलै अर चौथै चरण मांय तेरह–तेरह अर दूजै अर तीजै चरण मांय इग्यारह–इग्यारह मात्रावां होवै। दूहै रा आं च्यारूं ई भेदां मांय तेरह–इग्यारह री मात्रावां रा हेर–फेर है। बडै दूहै मांय पैलड़ा दोय चरण सोरठै रा अर छैकड़ला दोय चरण दूहै रा होवै। बियां ई तूंबेरी मांय पैलड़ा दोय चरण दूहै रा अर छैकड़ला दोय पद सोरठै रा होवै अर दूजै अर तीजै चरण री तुक मिलाई जावै।

दूहै रो अेक पांचवों भेद 'खोड़ो दूहो' ई होवै, जिणरो चौथो चरण आधो ई होवै। इण रा उदाहरण कमती मिलै।

छंद रचती वेळा दध आखर री ख्यांत राखणी पड़ै। दध आखर—अरथाव—बळता–झळता आखर जिका सुभ नीं गिणीजै। फगत वीर साहित्य मांय बरत्या जाय सकै, क्यूंकै बो तो खुद ई ओज अर मरण–मारण री सीख देवणवाळो काव्य है। अै अठारह दध आखर इण भांत है—ह, झ, ध, र, घ, न, ख, भ, ग, ड, ठ, ट, थ, ण, द, ल, प, म। अै आखर छंद रचती वेळा पैलीपोत नीं आवणा चाईजै। इणी भांत सुभ–असुभ गणां रो ई काव्य मांय ध्यान राखणो पड़ै। स, र, ज, त अै च्यार असुभ गण है। अै छंद री सरुआत

मांय नीं आवणा चाईजै। म, न, य, भ अै च्यार सुभ गण है। डिंगळ काव्य में सरुआत मंगळाचरण सूं करण रो विधान है। छंद इष्ट रो ध्यान करतां पोळावणो चाईजै।

वीर रस रा दूहा-सोरठा रचारां मांय, वीर रसावतार सूर्यमल्ल मीसण, हुकमीचंद खिड़िया, कृपाराम खिड़िया, रामनाथ कविया, गोपालदान आसिया, बांकीदास आसिया, स्वरूपदास अर मुरारिदान जैड़ा कवियां री सिरै ठौड़ रैयी है। थोड़ै-घणै परिमाण मांय तो डिंगळ रा घणकरा कवियां इण छंद मांय आपरी रचनावां करी ई है। औ साहित्य जितरै लूंठै परिमाण मांय रचीज्यो बित्तै लूंठै परिमाण मांय छप'र मुंडागै नीं आय सक्यो। इणरै संग्रहण री व्यापक योजना बणनी चाईजती। राजस्थानी मांय इतियास सूं सनमन राखणवाळो डिंगळ रो वीर गीत साहित्य है, बियां ई इतियासूं मैतब राखणवाळो दूहा साहित्य पण है, जियां पाबूजी रा दूहा, अमरसिंघ रा दूहा, लाखै फूलाणी रा दूहा आद। इतियास मांय इसड़ो कोई वीर नीं होयो, जिणरी 'सर' करतां किणी गीत कै दूहै री रचना नीं होयी होवै। आऊवा ठाकुर खुशालसिंघ, दुरगादास राठौड़, पत्तो चांपावत, जयमल राठौड़, कल्लो राठौड़, राव कांधळ जिसड़ा भड़ां माथै घणा दूहा कहीज्या।

वीरां पेटै दूहा-सोरठा साहित्य मांय इतरी भांत री उत्प्रेक्षावां करीजी है कै आं सगळां नै अेकठ बांच'र कोई भी साहित्यप्रेमी घोर अचंभै मांय पड़ जावै अर उणरै मुंडागै वीर भाव रो इतरो सैंठो वितान उघड़ जावै कै बरसां लग उणनै समझण मांय खपता रैवो भलांई। अठै प्रसंगाऊ अेक बात और कैवणी चावां कै धपाई सबद ग्यान बिना डिंगळ रै भांत-भंतीला छंदां मांय कैवटीज्योड़ै ग्यान रो टूट्यो-फूट्यो उच्चारण भलांई कर लेवो, उणरी अरथ छटा रो आणंद नीं लियो जा सकै। डिंगळ री अत सिमरधी ई उणरो काळ बणगी।

दूहै छंद री सखरी महत्ता नै इण भांत जताईजी है :

छोटी तुक रो दूहरो, गीत कवित्त को भूप।
जैसे हरि बलि छलन को, रच्योज बावन रूप।।

दूहै री खासियत आ कै इणनै गेय अर कथण दोवूं रूपां मांय बरत्यो जा सकै। भांत-भांत री रागां मांय दूहां नै गाया जाय सकै। डॉ. हरिसिंह राठौड़ रै कथन उणियार, ''दूहो अेक इयांकलो छंद है जिको मिनख रै आणंद-उल्लास, आसा, उमंग, राग-रंग, हास-विनोद, विरह-बिछोह, जोग-संजोग अर करुणा-विलाप, ताप सैंग अवसरां माथै हाजर लाधै।'' कैवण रो अरथ कै रजथान धरा रै सैंस भावां रै बखाण रो औ सबळ साधन है। राजस्थानी साहित्य रै इण गौरव छंद मांय सूरता अर वीरता रै बिड़द रा कीं अैनाण इण भांत है।

राजस्थान वीर भौम कहीजै। अठै रै वीर मानवी रो इष्ट ई वीर देवी। बीस भुजावां नै धारण करणवाळी देवी जद बाघ री असवारी करै तो उणरै तेज नै झालणो ओखो :

बड़कै डाढ वराह, कड़कै पीठ कमट्ठ री।
धड़कै नाग धराह, बाघ चढै जद वीसहथ्थ।।

वीरता इण धरा री असल पिछाण है। वीर नारी नै वीरां विहूण कोई ठौड़ ई पसंद नीं है :

मतवाळा घूमै नहीं, नंह घायल बरड़ाय।
बाळ सखी उ देसड़ो, भड़ बापड़ा कहाय।।

इण धरती ऊपरां कायरां री कीं ठौड़ नीं रैयी। कायर अर कपूत रो मेहणो लागै :

कायर कुदत्त कपूत, मेहणो लागै जनमियां।
सुरो सुदत्त सपूत, नामी इण घर नीपजै।।

आळसी, क्रितघण अर कुमाणसां नै कुण आदर देवै? कपूत-सपूत री पारख ई घणी सोरी है—कवि निस्तारो करतां कैवै :

झालर वाज्यां भगतजन, बंब बज्यां रजपूत।
अेतां ऊपर ना उठै, आठूं गांठ कपूत।।

जुधां रो वरणन करण मांय राजस्थानी कवि रो मन घणो रुच्यो है। पौराणिक पात्रां री लीलावां मांय ई जठै-कठैई किणी सूं जुध लड़ण रो प्रसंग आयग्यो तो कवि उणनै जीवंत जुध प्रसंग रै रूप मांय ई पेस करयो है। डिंगळ गीतां मांय जोरावरसिंघ रो कह्यो राम-रावण जुध, मुरारिदान बारठ रो क्रिसण रो नाग-दमण, जगा खिड़िया रो क्रिसण-सिसपाळ जुध वरणन बांच्यां रूंकटा ऊभा होय जावै।

जुध लड़्यो तो धरती माथै जावै, पण उणरो असर सुरगां लग होवै :

घनघोरां तोपां घुरै, वजै हाक विकराळ।
लूहर ले अछरां लखो, कबडी खेलै काळ।।

तोपां रै मुंडागै ई भड़ इण भांत, निसंक भाव सूं जुध लड़ रैया है, जाणै जुध नीं कबडी रो कोई पैणो मंड्योड़ो है। इण जुध नै जोय-जोय सुरग री अपछरावां इण मोद सूं लूहर निरत कर रैयी है कै वीर गीत हासल कर इसड़ा भट्ट म्हारो वरण करसी। रजपूत खातर तो जुध खेती रो सो खिसब है। कैयीज्यो कै रजपूत रै घरै जलम लेय'र जुध नीं लड़्यो तो उणरो जलम ई अक्यारथ गयो :

जाया घर रजपूत रै, खगां न थाया खेल।
जलम बिरथा पाया जिका, सैया ज्यां न सुसेल।।

वीर रै मन मांय उछाव होवै। आज दुस्मण रै लाय लगाय रजपूती मरजाद री रिछ्या करस्यां :

सहसां खग्गां सेलड़ा, देसां दुसहां दाह।
आज करां सह ऊजळी, रजपूती री राह।।

रजपूती री राह सोरी कठै होवै ? उणनै निरा ई गुणां री रुखाळ करणी पड़ै :

रण खेती रजपूत री, कब हूं न पीठ धरै।
देस रुखाळै आपणो, दुखियां पीड़ हरै।।

वीर पुरुस रण सूं मुंडो मोड़ भाजण री कदै नीं सोचै। बो तो जुध मांय जूझ'र मरणै नै आपरो हक समझै। जुध सूं पूठ मोड़ण री बात तो भगवान नै ई नीं रुचै :

उण ही ठांम अजोग, भाजण री मन में भणै।
आ तो बात संजोग, राम न भावै राजिया।।

वीर होवै जिको काछ अर वाच रो साचो होवै। वीर मिनख वचन नीं लोपै। प्राण जावो, पण वचन नीं जावो री आण राखै। इसड़ा वीरां खातर कवि कैवै :

बोलै जितरा बोल, नर जे निरवाहै नहीं।
त्यां पुरसां रा तोल, कोडी मूंघा करणिया।।

वचन री रुखाळ जिको नीं करै, उणनै कवि किण भांत बकसै। गोळी हंदा गीत वाळा शंकरदान सामौर तो रामजी नै अमीणी देवण रो मौको नीं चूकै :

करियोड़ा घण कौल, फेरां रा बै फूटरा।
मोटी करी मखौल, आखै जग में अधपति।।
अेक प्रति री आद, नह निभाय सकिया निपट।
जग राखण मरजाद, आप अवतरया अधपति।।

राजस्थानी कवि इण वीर भौम रा जाया भड़ां री कीरत रा ई गाण नीं करै, अठै री वीर नारियां रो बखाण करण मांय ई बो लारै नीं रैवै। नारी नै अबला कैवै। बेटी रै जलम उपरां कोई उछब नीं मनायो जावै। पण अेक दिन बा वीर छत्राणी आपरी सारथकता साबित कर देवै। चिता चढण सूं पैली बा आपरै बाबल नै सनेसो भेजतां कैवै :

पंथी अेक संदेसड़ो, बाबल नै कहियाह।
जायां थाळ न वाजिया, टामक टहटहियाह।।

वीर नारी नै नीं तो कायर रो सागो सुहावै अर नीं ई कायर कैवावण वाळै बाळक नै ई जलम देवणो चावै। फेरां री वेळा बा आपरै धणी री परख कर लेवै :

परणंती मैं परखियो, वाचा सुध, बलवंत।
भड़ पैलां ही भाजसी, कदी न भागै कंत।।

कवि कैवै :

राठौड़ां री कुळ त्रिया, सीला गरभ न धरंत।
ज्यां भरतार न भंजणा, ते भंजणा न जणंत।।

वीर नारी रंडापै री बित्ती परवाह नीं करै। पण कायर धणी सफां खारो लागै। वीर नारी कैवै :

बो सुहाग खारो लगै, जद कायर भरतार।
रंडापो लागै भलो, होय सूर सिरदार।।

आपरै धणी नै अखरावण देवतां कैवै :

पाछा फिर मत झांकज्यो, पग मत दीज्यो टार।
कट भल जाज्यो खेत में, पण मत आज्यो हार।।

कायर पति तो कांई, पड़ौसी ई चोखा नीं लागै :

नंह पड़ौस कायर नरां, हेली वास सुहाय।
बळिहारी उण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।

वीर भड़ री थाती वन मांय खुल्लै विचरतै सिंघ जैड़ी होवै। बांरै खातर कवि कैवै :

सिंघा देस विदेस सम, सिंघां किसा वतन्न।
सिंघ जिका वन संचरै, वै सिंघां रा वन्न।।

वीर तो इकोवड़ा ई भला। सिंघा री टोळी नीं होवै। कायरां रो घण कांई काम रो?

गांधारी सौ जलमिया, कुंतां पांच जणेह।
वै पांचूं रण जीतिया, घणचक काह करेह।।

पांडवां री बात माथै कवि वीर दुरगादास री वीरता रो बखाण करै। बांरै बखाण रा घणा दूहा है। ओहड़ी पड़ियां पांडवां नै अेक समूळो बरस अग्यातवास कर'र काटणो पड़्यो, पण दुरगादास तो अेक दिन ई लुक'र नीं काढ्यो। साम्हीं छाती औरंगजेब सूं लड़तो रैयो :

बारह मासां बीह, पांडव ही रहिया प्रछन।
दुरगो हेको दीह, आछंत रह्यो न आसवत।।

भड़ इतरा अलमस्त कै बांनै नीं चाईजै म्हैल दुमेल। कवि इसड़ा जोधां रै आवास वरणन करतां कैवै :

टोटै सरका भींतड़ा, घातै ऊपर घास।
बारीजै भड़ झूंपड़ा, अधपतिया आवास।।

वीर भौम राजस्थान रो जस उणरा सुभागिया सपूतां रै कारण इतियास मांय सदा ई अमर रैयी। कैयो जाय सकै धन जोधा अर धन बांरी कीरत नै कथणवाळा कवेसर। दोवां ई धरती री मरजाद री रुखाळी करी अर आप-आपरै किरतब पाळण मांय आगैड़ी रैया। निवण जोधारां—निवण कवेसरां।

◆◆

संग्राम सिंह सोढा

पाणी बिन मिनख पतबायरो

राजस्थान री 'वीर भोग्या वसुधरा' रै रज-रज में पाणीपणो है। वा वीरां रै रगतपान सूं तृप्त है। औ कांई पाणी पीवसी ? इण आसय रै संदरभ मांय क्रांतिकारी कवि शंकरदान सामौर लिखै :

पाणी रो कांई पियै, रगत पियोड़ी रज्ज।
संकै मन में आ समझ, घन नह बरसै गज्ज।।

मतलब आ कै अठै री जुद्धवीरां री भोम है जिकी रगतपान करै, पछै आ भलां पाणी सूं कियां रंज सकै ? अठै आंख में रातै कस्सै वाळै सपूतां सुजस री चावना में 'सटै सलूणै सीस' देय पाणी उजवाळियो। अैड़ै अणीपाणी वाळां रा किस्सा ख्यातां में भरया पड़्या है। अठै रै वांकम वाल्है मरदां मन में मिनखापणो, नैणां में सूरापणो अर कांधै माथै कफन राख ई पराक्रम रो परिचै दियो। जियां वीरवर कीरतसिंह सोढा जोधपुर रै संदरभ मांय औ दूहो उल्लेखजोग है :

पाणी रजवट पूर, वाणी चख अम्रत वसै।
सैण हतो रण सूर, किरतै सम दूजो कठै।।

संसार में मानखै सूं मूंघी अर मोवणी कोई चीज नीं है, पण सगळा मिनखां में मिनखपणै री तमीज भी नीं है। वा मिनख पाणीदार री पंगत में नीं गिणीजै।

राजस्थान में पाणी लोही सूं ई घणो मूंघो है, पण पाणी अठै जित्तो गैरो है उत्ती ई गैरी मिनखां नै समझ है। उत्तो ई गैरो अथाह ग्यान भी है। 'जलमभोम री बात' में कैलासदान देवल लिखै :

सचियापुरा, पो. माणकासर, तहसील-बज्जू, जिला-बीकानेर (राज.) 334305 मो. 9983181510

 ISSN : 2320-0995

जळ गहरो गहरी समझ, गहरो ग्यान अथाह।
मोत्यां मुहंगा नर अठै, वाह वासणी वाह।।

पाणी–पत राखण सारू अमराण रै सूरमै राणै रतनसिंह पाणी–पणै री प्रीत ई नीं, आन–मान सारू मिटणियै वीरत्व रै गुण नै उजागर कियो। जणा ई अमलां री वेळा उण पाणीदार पुरुष नै रंग दिरीजै :

रतन्न पाणी राखियो, उजवाळियो अमराण।
अमलां वेळां आपनै, रंग हो सोढा राण।।

जीवण में पाणी (प्रतिष्ठा) ई सारभूत तत्त्व ई नीं गुण है। इण गुण कारण तो मिनख रो मोल हुवै। जिण भांत जळ सगळी मलीनता नै पवित्र करण वाळी अद्वितीय धरोहर है, बियां ईज पाणी (आब) मिनख री पैठ, पत अर साख नै उजाळण वाळो गुण है, पिछाण है। इण वजह सूं इण गुण नै अंवेर राखणो जरूरी लखावै। इण संदरभ में विद्वान ठाकुर रामसिंह तंवर बगती री इण गति माथै आपरी ऊंडी दीठ रै पाण ठीक ई कैयो है :

मोती रो पाणी उतर, पाछो चढै न फेर।
बगती री आ ही गती, पाणी राख अंवेर।।

जिण मिनखां रो पाणी उतर जावै, बांरै माथै लाख खरच करयां ई पाणी नीं चढै। कैवत है कै उतरिया पाणी पहाड़ां नीं चढै। किणी ई मिनख रो किणी ई कारण सूं जे पाणी उतर जावै तो बो मिनख, मिनख री कतार में नीं गिणीजै। पाणीदार मिनख तो मरण समान व्है जावै। इणी साख में कविवर रहीम जी री अै ओळ्यां हामी भरै ईज है :

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानस चून।।

डिंगळ रै ख्यातनाम कवि लक्ष्मणदान कविया जिण नरां रो पाणी निठ जावै बांरै जीवण नै अदबायरो कैवतां संको नीं करै। कवि रै सबदां में :

निठियो पाणी ज्यां नरां, मिटियो बांरो मान।
बो जीवण अदबायरो, छिप छिप काटै छान।।

सिद्ध सोरठा में ई पाणी–हीणै मिनख री गत नै इण भांत दरसायो है, जिको बांचण जोग है :

मोती पााणी–हीण, कदै नईं चित में चढै।
मिनख बापड़ो दीन, पाणी जद जावै उतर।।

महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ अेक नायिका रै मारफत प्रीत री आन नै पाणी री उपमा देवतां थकां उणां री आबरू नै नारेळां रै ज्यूं राखण री हिदायत देवै :

प्रीतम पाणी आपणो, नारेळां ज्यूं राख।
कोडी पाणी ऊतरै, चढै न खरच्यां लाख।।

संत सेऊ-सम्मन री अेक परची में अेक छंद मिलै, जिणमें मिनख नै आपरो पाणी कायम ई राखणो है, रत्ती भर पाणी उतरियां पछै बडो मुस्कल व्है :

माथो जाज्यो नाक सूं, नाक न जाज्यो चिक्क।
रतीइक पाणी ऊतरै, बहुरि चढै नहिं लक्ख।।

इणीज बात नै लेय'र किणी स्याणै-समझणै कवि अंजस जोग यूं उजागर कीनी है :

पाणी में जाय पावलो, लोही व्हैया जा लक्ख।
काया व्ही जा साबती, नाक न जाजो नक्ख।।

जिण मिनख रो पौरस नै पाणी (ओज, शौर्य) चल्यो जावै या खतम व्है जावै। छेहली उमर में उणनै मोटयारपणै री यादां सालती रैवै। इण बाबत ख्यातनांव कवि रायसिंह सांदू मिरगेसर रो औ सोरठो इण भाव री हामी पूरै :

मनमौजां माणीह, जोबन हुंतो जां दिनां।
पौरस नै पाणीह, मारग लागो मोतिया।।

जिण मुख माथै पाणी है उणसूं पाणी मांगणो चाईजै। पाणी बायरै मिनख में धूण रो दोय दाणा नीं हुवै। वा कीं नीं पाय सकै। बा तो फगत धरती माथै भार ई समझो :

पाणी वां पै मांगियै, जां मुख पाणी होय।
पाणी-पाणी बायरो, पाय सकै न कोय।।

◆◆

निशान्त

पाड़ोसण किरायेदारणी

बा म्हारै घर रै आथूणै पासै आळै घर में कोई छह महीनां पैली आई ही। स्याळै रा दिन हा। म्हैं बीं नै पैली बार जद देखी तद बा कचरै आळी गाडी में कचरो गेरण बारै निकळी ही। म्हैं ई कचरो गेरण खातर ई घर सूं बारै आयो हो। बा कचरो नाख'र पाछी घर में बड़ती म्हनै देख'र बारणै में थोड़ी ठैरी अर मेरै कानी तकायो। खैर, बा जादा देर नीं ठैरी अर मांय चली गई पण म्हैं बीं री छिब सूं बंध चुक्यो हो। बा ना तो घणी गोरी ही अर ना ई काळी। सलूणो रंग हो। बा भरवैं डील-डोळ री अर आछै कद आळी, फूटरी लुगाई ही। केई दिनां में ठा पड़्यो कै बा साड़ी ई पैरै अर सूट भी। बीं पर अै दोनूं पैरावा ई खूब फबता। बीं रै चैरै पर कदै जे उदासी मंडरा भी जावती तो रूप री गरमी सूं उड जावती। बा हर बगत चैळकै निजर आवती। हां, बै स्याळै रा दिन हा अर गळी में निकळणो अर उठणो-बैठणो आम बात ही। म्हैं तावड़ै कुरसी पर गळी में बैठ्या करतो। बा भी गळी में पूरी निसरती। बीं रो घरधणी अेक मकैनिक हो अर अेक दुकान माथै काम कर्‌या करतो। बो रोटी लेय'र दिनूगै बेगो चल्यो जावतो। आ सारै दिन बैली होवती। म्हारै अगूणै पासैआळो घर आं रै रिस्तेदारां रो हो। रिस्तेदारी ई कोई नजदीकी री ही। बा टेम पास करण सारू बां रै घरां जाया-आया करती। बारै निसरती बगत बा गळी री और बहुवां दांई औलो कोनी कर्‌या करती। कारण स्यात बीं रो पढ़ी-लिखी होवणो अर खुलै बिच्यार आळी होवणो हो पण बाद में बा ई कीं न कीं औलो करणो सरू कर दियो। कारण स्यात बीं रै रिस्तेदारां रै घर री बूढळी ही। बां रै घर री बहुवां रात-दिन घूंघटो कर्‌या करती। बिण बरज दी होसी। म्हारो बीं सूं मेळ-जोळ ई बात सूं ई कीं जादा होयो कै करोना रै कारण म्हारी दोईती म्हारै कनै रैया करती अर बीं रै दो टाबरां सागै खेल्या करती। कई बार

वार्ड-10 , निकट वन विभाग , पीलीबंगा-335803 , जिला-हनुमानगढ (राज.) मो. 08104473197

म्हैं खुद ई आं दो-तीन टाबरां नै लेय'र पारक जावतो। बठै अै दोनूं-तीनूं टाबर कई देर रमता। म्हारी दोईती बां रै घरै जावती अर बांरा टाबर म्हारै घरे केई देर रमता। अेक-दो बार बा म्हारी दोईती रा बाळ बाह्या अर चोटी करी। म्हनै आछो लाग्यो। बा जद भी म्हारै बारणै आगैकर लंघती, जरूर झांकती। म्हनै गळी में देख'र भी जरूर झांक लेंवती। बीं री नेह बरसावती आंख्यां घणी आछी लागती। बीं रो आदमी भी आछो परेमी जीव हो। गळी में मिलतो तो राम-रूमी करतो अर अंकल कैय'र बतळावतो। बा कदे म्हांनै कोई सुआल नीं घाल्यो अर तंग ई नीं करया। हां अेकर जद पाणी री तंगी आई तो बा पाणी रो जरूर पूछ्यो। म्हैं बीं नै जबाब नीं देय'र कैयो—है तो थोड़ो पण दो-च्यार बाल्टी ले जाओ। पण बा लेय'र नीं गई। बाद में अेक दिन जद बा म्हारै घरै आई तो म्हैं बीं सूं पाणी नीं लेज्याण रो पूछ्यो तो बा बोली—इयां ई सार लियो। म्हारली तरां बीं रो गळी रै और घरां में भी बरताव आछो हो। बा सारै घरां आवती-जावती अर बतळावती। दुराजै आगै खड़ी दूसरी लुगायां बीं नै आप कनै बुला लेवती। स्यात सारा जणा बीं री परसनल्टी सूं मोहीजेड़ा हा। पण बीं री मकान मालकण बीं सूं खुस नीं ही अर बीं नै महीनै भर बाद ई मकान खाली करण रो फरमान सुणा दियो। कारण बतायो कै थारै तो सारलै रिस्तेदारां रै टाबरां रो घड़घसियो रैवै। टाबर मेन गेट खुल्लो छोड देवै अर डांगर बड़ज्यै। जद आ बात म्हैं सुणी तो बडो दुखी हुयो। इत्तै थोड़ै दिनां में मकान खाली करण रो कैवणो तो सरासर ज्यादती है! पण म्हैं के कर सकै हो? जे बात गळी में चालती तो म्हैं जरूर बांरो पख लेवतो। पण बात आई-गई होगी। बा बठैई रैवती रैयी। मकान मालकण अर बीं री बोलचाल होवती सुणीजती। मकान मालकण रो आठ-दस महीनां रो पोतो हो। बा इन्नै-बिन्नै खिलावती रैवती। आ ई आपरी गरज नै बीं नै बुलावती अर आपरै टाबरां सागै बिलमावती। म्हैं सोच्यो—बात बणगी लागै पण नीं बात ज्यादा दिन नीं बणी रैयी। गरमी आवतां-आवतां बै केई दिन नीं दीस्या। म्हैं सोच्यो—रिस्तेदारी में कठै न कठै गया होसी। दसेक दिनां बाद दुपारै जद म्हैं गळी में निकळ्यो तो देख्यो कै गळी में अेक जोंगा खड़ी है अर बीं मांय अेक अलमारी लदी है। मेरो माथो ठणक्यो कै आ जरूर बांरी अलमारी है अर अै तो जावता दीसै! म्हैं घर में आयो अर च्यारदीवारी उपरांकर देख्यो तो बीं रो घरआळो अर अेक जणो और कीं समान ऊंचायै बगै हा। बो म्हनै देख'र कैयो—अंकलजी राम-राम। मेरै मूंडै सूं निकळ्यो—चाल पड़्या के तो? बो कैयो—हां! इत्तै में बां रै लारै-लारै बा भी दीसी अर बा कैयो—अंकलजी राम-राम। म्हैं कैयो—भली राम-रमी करी थे तो? ''के करां तो?'' म्हैं बारै निकळ'र देख्यो—बा सागी बीं जगां खड़ी ही जद म्हैं बीं नै पैली बार देखी ही। बा म्हारली दोईती नै देख'र आपरै टाबरां नै बीं सूं मिलण सारू बुला लिया। अब देखण नै के हो? म्हैं घर में आयग्यो। बा सारां घरां मिलण-जुलण गई। म्हारै घरै भी आई। म्हारी घरधिराणी बीं नै कैयो—पाड़ोसियां रै आवै तो म्हारै भी आई, कदै सीधी ना लंघ ज्याई। म्हैं सोचै हो—अेक लुगाई नैं भी दूसरी फूटरी लुगाई आछी लागै।

◆◆

उपेन्द्र अणु

रई गई रेत ज रेत

जोवनियात छोरी नी
कम्मर वजू आमरा खातो
समनियं नो धुंवाड़ो
फैलाईग्यो है
च्यारै मैंरै
देखयं हैं अवै
मनख / रूंखड़ं / आंगास/ पृथमी
नै सब
जेंम देखाय मुंडू आंधा काच मए

जातंर्य एना औजरा मएं
हागड़ो, खाखरो, टेमण्णी,
अरेंड अर अडुवा नं
लीलंचम रूंख

काणू थईग्ये आंगास
फूंफाटा मारै हूरज
जणां थकी
हुकाई गई नंदी
अर रई गई
रेत ज रेत।

शक्ति वॉच सर्विस, ऋषभदेव, जिला-उदयपुर (राज.) 313802 मो. 9414976257

कारीगर

पांच तत्त्व नूं खोरिया रूपी घोर
मांडै है अद्‌भुत कारीगर
नती लागतो मांडवा मए ऐनै
वधारै टेम
केमकै अणै बणावी दीधं
असंख्यात तरै-तरै नं भांत-भांतिकं घोर
कई हेंगड़ा वारं पूंछड़ा वारं
रेंगवा वारं हैंडवा वारं दोड़वा वारं
थोड़क काचं तो थोड़क पाकं
थोड़क पौचं तो थोड़क मातं
पण पछै बणाव्यू घणा मन थकी
पूरी हटोटी ऊं
बै पगू घोर
बणावी नै राजी भी थ्यो
पण अतरौज पछतणो भी
खींजणो भी
पण करै हूं
कैनै क्है नै कुण हाम्भरै
अणै बै पोगं वारै तो
बणाब्बा वारा नै भी
भूलावी दीधो
यो तो दौड़ै है नै
आंगास मए उडै है
मंडारा नूं नाम लई
हेत्तं नै ठगै है
अर ज्यं मली लाय
व्यं चगै है।

◆◆

मयलो

म्हारा मयला माथे जारै भी
बीजा ना अहम नो हथोड़ो पड़्यो
तो मयलो आकर विकर थईग्यो
जेंम रेत ना वगड़ा मएं
तरस्या वाट मारगू नै
लू नी झापेट लागी।
पण खुसामदी ज्हेर थकी त्यार कीधो घौण
पूरी तागत ऊं पड़्यो
तो मयलो लेतराईग्यो
फाटैला सैतरा परतै।
पण सैतरा नै भी
आपणै फाटा व्हेवा नो गुमान है
जारै-जारै भी वैना माथै
बईमानी नी थीगड़ी लागै
तारै-तारै व्हो आपणै आप नै
बोड़ीगामा नो हीरो हमजी फरै
अर ज्यूं मलै व्यं चरै
मयलो बापड़ो
मन मय नै मन मय हैंजरै।
पण अेनै कुण गांठै
मन तो पौमातू फरै है आजकाल
वणी जी हजूरी नी औण्णी प्हेरी
मूंडा माथै चलाकी नी चमक चोपड़ी
रूपाळी वांहे
पण व्हा भी अेक दाड़ो
घाघरा ना जेब थकी
कांच काड़ी वताड़ी दै
वैनूं असली रूप अर मयलो
पसियातापो करतो रई जाए
वणं वना टोपी वारं वांदर परतै।

◆◆

ISSN : 2320-0995

भवानीसिंघ राठौड़ 'भावुक'

झाड़का

इण रूपाळी मायड़भोम में
भांत-भंतीला मोवणा रूंखां रै सागै
उग्याया, लांबी अर खांगी सूळां आळा झाड़का!
रूंखां री ठाडी छांव सूं
उकळता उन्हाळा में
हियो हरखै, काळजो सरसै!
रुत रै परवाण सगळा रूंखां सूं
मीठा गटक फळ बरसै!
पण
आं झाड़कां सूं
करसण करता करसा री
धोती उळझै।
कदै-कदास अै झाड़का
आपसरी में इयांनका उळझै
कै स्याणा-समझणा मिनख सूं
सुळझायां नीं सुळझीजै!
अै ओछा कद रा है...
पण उळझाड़ घणो करै
इणां रो फगत अेक ईज फायदो
डांगर घणा चाव सूं चरै
पण समझणा जिनावर
इणां रै नैड़कर ई नीं निकळै!

गांव-पोस्ट : टापरवाड़ा, तहसील-परबतसर, जिला-नागौर (राज.) 341512 मो. 7016136759

झाड़कां रो सुभाव है—उळझणो
सुळझायां नीं सुळझणो!
आंनै जद करसाणी कस्सी रा झफीड़ लगावै
जद थोड़ा-सा निचल्यो बैठै
पण
सैणां रो बायरो चालतां ईज
बिरखा री छांटां लागतां ईज
इणां में पाछी कूंपळां फूटण लागै
मिनखां रा पेट पाळणी फसलां सूं पैलां
अै नकटा झाड़का!
सरणाट करता ऊंचा बधण लागै...
अर आपरा कु-सुभाव रा कांटां सूं
आखी जगती नै बींधण लागै।
साच्याणी!
आं झाड़कां सूं
भारत री रूपाळी मनमोवणी भोम
आंती आयगी
आंती आयगी, आंती आयगी।

मिनखपणो अर मानखो

मिनखपणो अर मानखो
कुरळावै है, अरड़ावै है, बरड़ावै है
आजकाल री खबरां अखबार में
बांच-बांच
दीखै कोनी
पूरो सांच?
पाणी में पसरती आंच
गळी-गळी, गांव-गांव
स्हैर-स्हैर औ ईज दांव
पूरी धूप, थोड़ी छांव
आथड़तो मानखो
अलबेली जीयाजूण सूं
आंख्यां में उळझणां री अणूती पीड़ रो
लखाव लियां
अेक-दूजा नै कटखावणी
निजरां सूं न्हाळतो!
मिंदर-मेजीद रा भोंपूंआ री
अटपटी खबरां नै उलटतो-पलटतो
आपरै मारग बैवणो छोड
सड़कां माथै बाइक रैलियां
अर नमाज रा जळसा में
झुळसीजतो
इतरीजतो
बगनो व्हैगो?
इय्यां लखावै
जाणै
मिनखपणो अर मानखो
भारत भोम नै छोड'र
अेलियन रै सागै
दूजा ग्रह री सैर करण नै
सिधायग्यो।
अर आपणै अठै
लाय लगायग्यो
आपस में भिड़ायग्यो
हाड-मांस रा पूतळां नै
भगवा गमछा
अर हरी चादरां
ओढायग्यो
साच्याणी मिनखपणो अर मानखो
अठै सूं तैतीसा मनायग्यो।

◆◆

ISSN : 2320-0995

डॉ. गौरीशंकर प्रजापत

किन्ना

आखातीज रै अकरै तावड़ै
रंग-बिरंगै किन्नां सागै
होळी रमतो आभो।
सिकरै री भांत
उडती कोयल किन्नी
नीलै आभै नै नापण री होड में
गिगन चढती जावै।
कीं सीधी म्हारै
आंगणै लिपसी खावै
केई खावै हिचका।
कीं इतरावै
कामणी रै लैरियै री भांत
म्हारै डागळै।
कठैई तो लड़्या पेच
कीं री आंख्यां हुंती च्यार।
ताणी रै कारण तणातणी
काटण री दिरीजी धमक्यां।
कठैई तो चाली कतरणी
कठैई घलिया ढेरिया
छेवट मांय
कीं लूटीजी, केई नै लूटी गई
जकी नीं लूटीजी

सह आचार्य, राजस्थानी विभाग, श्री नेहरू शारदा पीठ पीजी महाविद्यालय, बीकानेर मो. 9414582385

बां काट्या गळा
घरां रा बुझाया चिराग
केई किन्ना
इतरा जिद्दी, इतरा माठा
कै उडण रो नांव ई नीं लियो
पड़्या रैया पोर री भांत
भखारी मांय।
होळै-होळै दिन आथमग्यो
आथूणी ओड़ी मांय
जकी नीं कटी, ना ई काटीजी
बै सावळ संभाळ'र राखीजी
जिणरो ठाह नीं पड़्यो
भाई-बैनां नै।
जकी कटी-फटी
उण मांय सूं केई तो झूलै ही
बिजळी रै तारां मांय
कीं फंसी झाळां मांय
कीं अटकी रूंखां माथै
केई सूनी हेली मांय
पड़ी चाटै ही धूड़
कीं तो नाळियां मांय पड़ी
भुगतै ही आपरा करम।
कित्ती ई भरियै बजार मांय
चींथीजै ही पगां सूं।
अबै तो नीं लाधै
आपरी जान री बाजी लगा'र
लूटण वाळा टाबर
दुबक'र पड़्या है खूणै मांय
हाथां मांय थाम्यां झुणझुणियो
जिण मांय बगारै
आपरो थोथो ग्यान।

◆◆

टीकल किन्नो

म्हारै आलीजै नै
मस्तानै स्हैर री
सूनी हेली रै
कंगूरा माथै अटक्योड़ो
टीकल किन्नो उडीकै
लूटण आळै छोरां नै।
कोई तो आवैला
हाथां मांय लियां बांस
आगै बंध्योड़ै छड़ै मांय
उळझाय'र म्हनै
आपरै मांय
करैला मुगत
इण सूनी हेली री
मुंडेर सूं।
पण किणनै फुरसत है आज
आखो स्हैर लाग्योड़ो है
बचावण नै
आप-आपरा प्राण।
काटण नै लाग्योड़ा है
अेक-दूजै रो किन्नो
समेटै आप-आपरी लटाई
बणावै मांय रा मांय गेड़ा
खेंचण नै लाग्योड़ा है
अेक-दूजै रै हाथां मांय सूं डोर।
देख'र इण खींचाताणी नै
फोड़ लियो आपरो माथो
टीकल किन्नो
खाय-खाय'र भचीड़
सूनी हेली री भींतां सूं।

◆◆

ISSN : 2320-0995

गीतिका पालावत कविया

सात समदरां पार सूं

आखर-आखर जोड़ लिखूं हूं
बातां मन री
ओळूं रा कागदिया बाचूं सैंग समै रा
बाळपणै सूं अजलग वाळा
इणी जुगत में
म्हारै मन रै भावां सागै
तोड़ूं इण जगती रा जाळा।

म्हारी धर वा
जठै खेजड़ी रमती ही
धोरां रै सागै
जठै रेत रा रंग
आंखियां माय भरीजै
जठै मोरिया
प्रीत जतावै बादळ सागै।

लिखूं आज म्हैं
सात समदरां पार सूं
कीं मन री बातां
धोरां धरती री ओळूं
रै सागै रमती
म्हारै मन-चेतै में गमती।

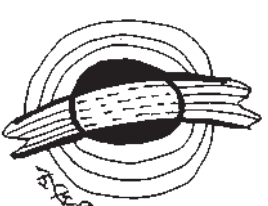

लुकिंस रोड, बेंटलेग, मेलबॉर्न, आस्ट्रेलिया मो. 7838880623

मन रा भाव अजै ई जागै मन में
बातां बिलमावै ओळूं नै
अर म्हैं मांडूं
घणै हेत सूं मन री बातां इण कागद माथै
सात समदरां पार सूं।

सांसां रो साच

आ काया पंचभूतां री
नीं जाण सकै
काया सूं बारै री बातां
इण जगत री
कै जीव जात री
काया तो माटी री होवै
माटी तो माटी नै जोवै।
पवन अर अगन
अकास अर जळ
माटी रै सागै गूंथीजै
अै पांचूं मिल'र
बण जावै अेक काया
इणसूं जुड़ जावै
सांसां रो साच,
जितरै रैवै औ मेळ
जीव रमतो रैवै
काया रै इण आंगणियै।
झीणी झारी तांतां
सांसां री बाजै
काया रै सागै रमती रैवै
जीव री सांसां
चालै जित्तै ई
काया इण जगत नैं
खुद री सगळी बातां कैवै।
◆◆

ISSN : 2320-0995

अरुणा अभय शर्मा

आवो, आपां अन्न बचावां

राजा बेटा रो ब्यांव रचायो
धन्ना सेठ नगर जिमायो
बण-ठण सगळा आय रैया है
लावा ले-लै जीम रैया है
नूंवी तरै रो जीमण औ दीसै
हलवा-पूड़ी अठै न दीसै
इब तो टाबर पिज्जा खावै
चाउमीन आंगळ्यां में नाचै
तरै-तरै री सजी स्टालां
पंगत में बैठ इब म्हे नीं जीमां
ऊभा-ऊभा, रमता-फिरता
जीमण में म्हे स्यान हां समझां
भर-भर थाळी, पकवान हां लावां
आधो खावां, आधो ढोळां
जो ना भावै चीज कोई तो
डस्टबीन में म्हे पधरावां
थोड़ो ई विचार न आवै
अन्नदेव है, भूखा सोवै
इब तो भीतर झांको मिनखां
इब तो थोड़ो सोचो मिनखां
मिनख जमारो इब तो सुधारां
आवो ! मिल इब सगळा विचारां
आवो ! आपां अन्न बचावां।

के-15, गली नं. 5, डिफेंस लेब रोड, देवी भवन होटल रै कनै, रातानाडा जोधपुर (राज.) मो. 8875015952

ग्यान री गोठ

ग्यान गोठ में बैठां जद
मूंडो राखणो बंद
जे मूंडो खुलो रैयो
अर कान जे राख्या बंद
ग्यानी ग्यान दे घरां जासी
अर थूं रैय जासी बंद
मनड़ा रो पिंजरो खोल जद
बैठैला ग्यानियां संग
खिलसी रूं-रूं तन-मन रा सगळा
अर आंख्यां होसी बंद
होसी आंख्यां जद बंद
खुलैला, बुद्धि रा पट
भरसी ग्यान भंडारा
बणैला मिनख थूं चटपट।

गोरी

गोरी री काया गोरी
पिव रै मन रो है उजियारो
कामणगारी गोरी रो पण
कामण करै घर में अंधारो
हाथ पकड़ बन्ना उण गोरी रो
करै आंगणै जो उजियारो।
करै आंगणै उजियारो
बहावै प्रेम रा व्हाळा
शिक्षा अर ग्यान सूं गोरी बा तो
करै सगळै गांव में उजियारो।
करै गांव उजियारो
जिमावै प्रेम सूं रोटी
छोड मत हाथ बन्ना उण गोरी रो
मनड़ा री जकी नीं है खोटी।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

डॉ. प्रमिला चारण

गठजोड़ो

काती री पूनम अर धीव रो ब्यांव

धरा री धीव अर आभै रै चांद रो
गठजोड़ो जुड़्यो
जुड़्या धीव रा लेख
अजब मेळ'र गजब संजोग
बरसां पैली री बात
डागळै री ऊंची मेड़ी
अर मेड़ी री बारी मांयकर

परण्यै फेरै पैली बार
आंखड़ल्यां में गैरो सुरमो सार
चुड़ला री ओट सूं
बा चांद रो दरसाव कीन्हो

लोक रै गीतां रो ालाप
वीरम री झीणी डीगी मांड राग में
सुहागण रै रातीजोगां रै
गीतां री गूंज अर सायबा री बाट

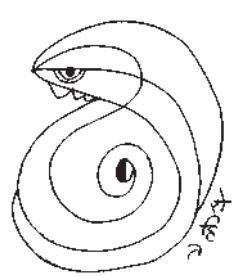

ओछी रातां अर मोटा दिन
आगलै दिन फेरूं रात री उडीक
चांद री चावना अर चांद री ई दीठ

कद रात पड़ै अर
कद बारी मांयकर चांद रो
दरसाव व्है...
धीव री तिरछना...

बारै चांद रो अर
मेड़ी मांय लालटेण रो उजीतो
कित्तीक रात अर कित्तोक सुपनो

चांद रो ढळणो बाई नै
घणो खारो लागतो
क्यूंकै चांद रै उजीतै में
बा आपरै हाथां री
मैंदी रो रंग जोवती
कै कित्तोक रंग आयो!
आंगळ्यां रा पैरवा घी में करती
तेल री मैंदी सांवळी रचती
अर घी री मैंदी राती-कुसुंबी रंग

कुसुंबी रंग प्रेम रो अर
रातो रंग ई प्रेम रो
सांवळो बिरह अर बिछोव रो

धीव रा धरम धीरा हा
अर लारलै जलम रो पुन्न
कै उणरै भाग में
प्रीतम रै रूप में चांद रो ईज लिख्योड़ो...

बैमाता रा लेख
टाळ्यां टळै अर कोई बाळ्यां बळै
उणनै चांद री लवना लागी

नईं, अैड़ो जलम बारम्बार
अमरपुर म्हारो सासरो अर
प्रीतम रो अमर सवाग
सुहागरात में चांद री दीठ अर
चांद री लगन
दीठो जैड़ो तूठो

पूनम पछै हर रात
चांद री कळा घट'र
घटतां-घटतां छाई
अमावस री घोर अंधारी रैण
धीव रा भाग धीव रै भेळा

प्रेम चौवटै ऊंची मेड़ी
जीवण रा दिन चार
भवसागर सूं उतरी पार
जिणरी अणंत ऊंडी धार

गगन झरोखै बैठ सुहागण
झालो दीज्यै अे
हेली म्हारी निरभै रहीज्यै अे

मां म्हानै अमरापुर परणाय'र
अमर सुहागण कीन्ही
धीव रो भाग'र अमावस रो अभाग।

◆◆

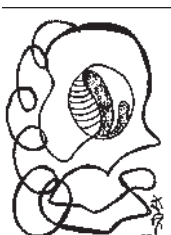

ISSN : 2320-0995

योगेश यथार्थ

आयो खेत बसंत

रंग बसंती गेहूं को, कनक केस ल्या धार।
लारां-लारां नाचरया, चणा चै'क पै आ'र।।

डोडा जाडो दूध छै, आफू मद में चूर।
धण्यां'र अळस्यां झूल'री, जोबन में भरपूर।।

च्यारूं मेरयां फैलरयो, सरस्सूं रो मकरन्द।
ऊंडा-ऊंडा बैठरया, मूळा सक्करकन्द।।

भौरलाठ भी लाठ बण, चमकावै छै फूल।
बैंगण ऊंधा झूलरया, चुभै बदन में सूळ।।

लाल टमैटर सरम सूं, घणी प्याज कै अैंठ।
मरच्यां मन मसोस रयी, लहसण कै मन गैंठ।।

मूळी जायी मोगरी, मूंडै चमक्यो नूर।
मनभावण मनमोवणी, मैथी मटर मस्यूर।।

कामणगारी कामण्यां, कामणगारा कन्त।
यूं कामण नै लार ले, आयो खेत बसंत।।

◆◆

अध्यक्ष, करसो खेत खलांण, ग्रामीण साहित्य संस्कृति संवृद्धन समिति ढोटी, शाखा-सरकन्या, जिला-बारां (राज.)
मो. 9928547927

मोहनसिंह रतनू

मत कर आतमघात

कायर उठ संघर्ष कर, तन देवण नह तंत।
पतझड़ रै झड़ियां पछै, बहुरि आय बसंत।।
अंधकार आतप हुवै, मघवा बरसै मेह।
ऊंडी सोच विचार उर, दुरलभ मानव देह।।
लाख जनम तन लांघियो, पुनि मानव तन पात।
बिरथा देह बिगाड़ नै, कर मत आतमघात।।
सुख-दुख इण संसार में, है विधना रै हाथ।
दुरदिन सनमुख देखनै, मत कर आतमघात।।
सदा नहीं संकट समय, सदा नहीं बरसात।
काळ रहै नहीं थिर कदै, कर मत आतमघात।।
सरमै पीहर सासरो, लाजै परिजन लोक।
दाग मिटै नह दाग सूं, सब जीवणभर सोक।।
परमेसर पूरण प्रभु, इणरै घर इंसाफ।
करै कूच बिन कायदै, मालिक करै न माफ।।
सुख माया घर संचरै, हंसी-खुसी जद होत।
घर आवै विपदा घणी, मरै जिका बिन मौत।।
दिल राख देसाण पत, मन रट करनी मात।
भली करै सब भगवत्ती, बण जावै सह बात।।
तीन लोक तारण तरण, नमो त्रिलोकी नाथ।
आयो कष्ट उबारलै, कर मत आतमघाल।।
काबू करणो क्रोध नै, मन रखणो मजबूत।
नैड़ा कर नह नीसरै, जिण पासै जमूदत।।

◆◆

से. नि. आरपीएस, मां भगवती नगर, मकान नं. 84, बालसमंद रोड, जोधपुर मो. 9460819909

 ISSN : 2320-0995

बनवारी 'ख़ामोश' चूरुवी

चार गजलां

(अेक)

सुदियां-सुदियां जाग भायला दिनूगै
सागी भागम-भाग भायला दिनूगै

रोट्यां माथै लाग भायला दिनूगै
लूण-मिरच रो साग भायला दिनूगै

नांव मती ले सिंझ्या पैलां थमणै रो
काम पड़्या बेथाग भायला दिनूगै

फगत रात रा बासा घरां मजूरां रा
उडती चीड़ी-काग भायला दिनूगै

अबखायां रै पाणी में तिरता सुपना
है साबण रा झाग भायला दिनूगै

मन कागद रै खेतां रो अणथक हाळी
तन थाक्योड़ी डाग भायला दिनूगै

सावणियै री रुत रातां री अपणायत
जिनगी दीपक-राग भायला दिनूगै

242, काव्यकुंज, प्रतिभा नगर, चूरू (राज.) 331001 मो. 9413605170

(दोय)

भीतर बहतो निरमळ पाणी कुण जाणै
इब संतां री डूंगी बाणी कुण जाणै

कुण सुळझावै जूण-जेवड़ी रा आंटा
जींवत जी नै लाय लगाणी कुण जाणै

लोही नै स्याही रो रूप बणावै कुण
हिड़दै-कागद कलम चलाणी कुण जाणै

मनड़ै री आंख्यां पर माया री पाटी
सांसां री फिरती घाणी नै कुण जाणै

धीरजवाही रा ठंडा छांटा देकर
बिगड़ी-बिगड़ी बात बणाणी कुण जाणै

मरजी रा नूंवा खुल्ला चौगानां में
मरजादा री सींव पुराणी कुण जाणै

अंतस रै टीबां पर ढाणी कुण बांधै
ताती-ताती धूड़ उडाणी कुण जाणै

(तीन)

मन लागै नीं दुनियां मांय अगूण बेसी
उतरादै, दिखणादै नीं आथूण बेसी

फेरूं जलम लेकर आऊं क्यूं भोम माथै
अेक फगत जिनगी लागै जद जूण बेसी

हिवड़ै मांय घणा घुरबाळा दरद हाळा
लोगां री बातां बुरकावै लूण बेसी

हाथ पसारी मति ना जिवड़ा झ्यान साम्हीं
चौथाई देकर मांगैली पूण बेसी

रत्ती, तोळा, मासा, सेर अधूण बेसी
खोटी होवै मांय हियै रै दू'ण बेसी

तिरियां-मिरियां नीं होवै लोभी रा कोठा
करम-कुवै माथै भूंवीजै भूण बेसी

जी सोराई सूं मायत जद घर रै मांईं
चौखट-चौखट कींकर मांडै सूण बेसी

(चार)

बिरखा बरसै, मांय नहावै टाबरिया
नाळा-खाळा खुद बण जावै टाबरिया

छुपम-छुपाई खेलण लागै चन्नरमा
बादळियां नै जद सरकावै टाबरिया

भोळी-ढाळी बातां री पटरी माथै
बाळपणै री रेल चलावै टाबरिया

सुपनां मांईं कंचा-गोळी खेलण नै
तारां छायी रात बिछावै टाबरिया

मायत सूं स्याणप री चिकणी तख्ती पर
बांका-चूंका आंक मंडावै टाबरिया

हाथ पकड़ कर सौरम रो फूलां ताणी
तितली बणकर उडता जावै टाबरिया

खेल-खिलौणां साथै सिंझ्या सामट कर
सिरहाणै लेकर सो जावै टाबरिया

◆◆

ISSN : 2320-0995

मोहन पुरी

आंख्यां : तीन गजलां

(अेक)

आंख्यां भेंट उळझगी आंख्यां
समदर देख गुदळगी आंख्यां

पापाई रा पग लांबा कर
हिवड़ै झांक संभळगी आंख्यां

बाट उडीकै ही मेहा री
पाणी पी'र कुमळगी आंख्यां

जगरो चेता रावा माहीं
आपूंआप कजळगी आंख्यां

भूंवै मनड़ो रोही-रोही
सुपनां ताळ डकळगी आंख्यां

बांथां लेवै बाच्या देवै
सेजां आण फिसळगी आंख्यां

करलै दीठ हथाई 'मोहन'
काजळ घाल उजळगी आंख्यां

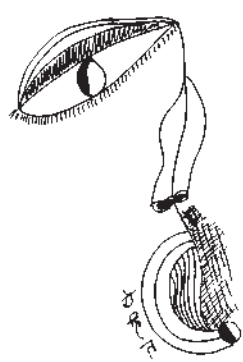

◆◆

गांव-होड़ा, पोस्ट-खाचरोल, तहसील-मांडलगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.) 311604 मो. 9672115032

(दोय)

बिणजारी ज्यूं बरणी आंख्यां
आंख्यां बैठ सुमरणी आंख्यां

गाडा भर-भर सुख मोलावै
सायब बाथां भरणी आंख्यां

पळकां तेरै काजळ ऊंडो
बण जावै बैतणी आंख्यां

बन मांही बैठी सीता नै
लागै राम नसरणी आंख्यां

निज सुपनां री चिण दै मेड़ी
चेजारा री करणी आंख्यां

आपूं आप उडै गिगनारां
धीजो धारयो धरणी आंख्यां

फेरा खावै चंवरियां मांही
आंटै-सांटै परणी आंख्यां

सरवर मांही कंवळ खिला दै
थळ जिनगाणी तरणी आंख्यां

मनां-मनां क्यूं मुळकै 'मोहन'
अंतस झळमळ करणी आंख्यां

◆◆

(तीन)

जद-जद देखी काळी आंख्यां
आभै प्रीत उछाळी आंख्यां

पाप पणी धर जावै मनड़ै
झूठी, कपटी, जाळी आंख्यां

राती-माती काजळ करनै
पैरै रोज खुगांळी आंख्यां

टीबां-टीबां पिव दरसण नै
भाजै पाळी पाळी आंख्यां

पनवाड़ो लै मिंदर जाती
निरखै पूजा थाळी आंख्यां

हरी बाजरी सत सिट्टां रो
करती खेत रुखाळी आंख्यां

मद पावै नित भर-भर प्याला
निरखै बैठ कलाळी आंख्यां

पलकां पलकां सुपना चिणती
हरखै दै दै ताळी आंख्यां

तंगा खावै मन लोभीड़ो
आंख्यां रैण उजाळी आंख्यां

मीरां री भगती नै 'मोहन'
थारै सांचां ढाळी आंख्यां

◆◆

ISSN : 2320-0995

कल्याण गुर्जर 'कल्याण'

भायला

हंसी उडा मत जाण भायला
राख कायदो काण भायला
बातां बातां में व्है जावै
अणचाया घमसाण भायला
जीं नै खायां बुद उपजै है
असो राखजै खाण भायला
सगपण जाणी जगां करीज्यो
पाणी पीवो छाण भायला
दूर असां सूं रह ज्यो जीवै
नकटाई कै पाण भायला
मेळ मिलाप भलो रैवै है
खोटी खींचाताण भायला
विपत पड़्यां मन धीरज धारो
चूको मत औसाण भायला
गरब करचा वांका जा देखो
ऊठचा सै कमठाण भायला
टिक्या राखणा पग धरती पर
क्यूं बिन पांख उडाण भायला
कदै सांच नै आंच न आवै
कथगा वेद पुराण भायला
परहित सूं 'कल्याण' करयां पछ
सोवो खूंटी ताण भायला

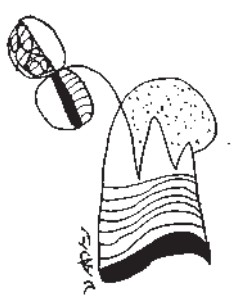

◆◆

मु. पो. मनोहरपुर, जयपुर (राजस्थान) मो. 9928878248

डॉ. अनिता वर्मा

बीस हाइकु

(1)
मन बेचैन
समझाऊं घणो म्हैं
समझै कोनी।

(2)
रूंख री पांत
घणी रूपाळी लागै
सीख देवै सबनै

(3)
ओळमो थांरो
अंतस उळझण
कांई उपाय!

(4)
घणी रूपाळी
छिब है थारी बस
देखता रैवां।

(5)
उमग्यो मन
धारवा परीत रा
बेह निकळ्या।

(6)
मन गोरी रो
कळियां ज्यूं चटखै
सावण आयो।

(7)
निसा गोरड़ी
फांकै ओस रा मोती
किरणां बीणै।

(8)
बावळो मन
हिरण ज्यूं फरै छै
मरीचिका म्हैं!

संस्कृति विकास कॉलोनी, गळी नंबर-3, डडवाड़ा, कोटा जंक्शन-324002 मो. 9351350787

 ISSN : 2320-0995

(9)
चांद सो मूंडो
लुभावै सब तांई
मन मोवणो।

(10)
हींडण लागी
ल्यो सगळी भायल्यां
सावण आयो।

(11)
गिरगिट ज्यूं
आजकाल मिनख
रंग बदळै।

(12)
बळबळती
दफैर पग दाजै
उभाणा पांव।

(13)
सूख्या रूंखड़ा
बादळ रूसग्या छै
अकाळ दीखै।

(14)
रंभाती गायां
गोधूळी बगत छै
बाछड़ा कूदै।

(15)
रैण बिछड़ै
आ मिल्या परभात
चकवा-चकवी।

(16)
मिरगानैणी
निजर बाण फेंक्यो
धस्यो काळजै।

(17)
नेह रो रंग
अंतस हळचळ
मन बेचैन।

(18)
मन री पीड़
उथळ-पुथळ छै
कुण समझै!

(19)
फूल खिलरया
मौसम बदळग्यो
मनड़ो राजी।

(20)
पुन्यूं रो चांद
मनमोवणो लागै
ओळ्यूं आवै छै।

◆◆

मोनिका गौड़

दस हाइकु

(1)
खाटा बोरिया
चरपरी आमली
माऊ रा हाका

(2)
रेसम रेत
माथै मधरी छात
बाबोसा म्हारा

(3)
बंदरवाळ
हिंगळू राच्या हाथ
ओळ्यूं आंख में।

(4)
पाणी री बारी
कड़ी खड़कावणौ
आंगणै भींतां।

(5)
राली गूदड़ी
जाजम तिरपाळ
फ्लोरिंग हेठै।

(6)
खाजा खजली
कढावणी रो दूध
बातां रुळगी।

(7)
सांझो तंदूर
खेतां होवती ल्हास
गुड़ती गाडी।

(8)
छात चौबारा
मुळकतो आंगणो
भरता डुस्का।

(9)
डोर किनका
सतोळियो कबड्डी
अै कैंडीक्रश।

(10)
गिणिया सिक्का
कळदारी खणक
क्रेडिट कार्ड।

◆◆

नवल सागर, माजीसा री बाड़ी, बीकानेर (राज.) मो. 9799094548

 ISSN : 2320-0995

राजकुमार जैन 'राजन'

फूल

हंसै अर हंसावै फूल
मस्ती में लहरावै फूल
नूंई ताजगी भीतर भरदै
मनड़ो घणो लुभावै फूल

कांटा में भी खिलता रैवै
हंसणो म्हांनै सिखावै फूल
हंसता-हंसता ज्यांन लुटावै
माटी नै महकावै फूल

प्रकृति री सुंदरता में
च्यारूं चांद लगावै फूल
तितली साथै लुकम छिपाई
भंवरां साथै गावै फूल

सियाळो-उन्हाळो सैवै
रोजीना मुळकावै फूल
होवै देव चरणां में अर्पित
जीवण सफळ बणावै फूल

◆◆

रोबोट

रोबोट मन्नै दिरादयो राम
आपोआपी हो ज्यावै काम
बेली जैड़ो साथै रैवै
'रोबू' उणरो राखूं नाम

भारी भरकम बस्तो मेरो
स्कूल बो ई ले ज्यावैगो
होमवर्क फुरती सूं करनै
म्हारै साथै खेलण आवैगो

रोबो कह्यां करैगो अब सूं
घर भर रो सगळो ई काम
मम्मी नै भी मिल ज्यासी
थोड़ो-घणो अब तो आराम

जब भी बोर होऊंगा मैं तद
उण सूं चोखी बात करूंगा
बगीचा री देखरेख करैगो
म्हैं साथै सैयोग करूंगा

◆◆

चित्रा प्रकाशन, आकोला-312205 (चित्तौड़गढ़) राजस्थान मो. 9828219919

आमां रो रस

आमां री सौवणी सौरम नै
अैड़ो जबरो रंग जमायो
सब्जी लेवण गयो हो भालू
आम लेय'र घर आयो

याद नीं रैया आलू उणनै
याद नीं रैयी गोभी
फीकी लागी आमां रै आगै
तरकारी ही जो भी

बादामी मीठा आमां रो
रस पीयो गाढो-गाढो
आमरस सूं आगै नीं है
कोई दूजो स्वाद ठाडो

गर्मी रै मौसम रो राजा
फळ है अजब-अनूठो
सगळा टाबर पियो प्रेम सूं
आमां रो रस चोखो मीठो

◆◆

वाणी रो जादू

मीठी वाणी में जादू है
सब में प्रीत जगावै
झगड़ा-टंटा, बैर भुलावै
प्रेम रो रस बरसावै

कड़ी बोली रै कारण
कागड़लो कांकर खावै
मीठी बोली रै जादू सूं
कोयल तो आदर पावै

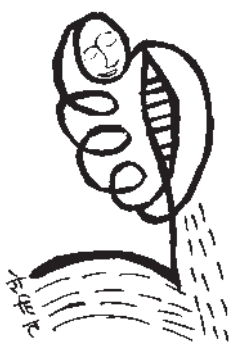

रिपियो-पीसो चूक ज्यावै
बोली तो साथ निभावै
आपरै घर सूं दूर देस में
सब नै मिंत बणावै

हार्‌योड़ा जीवण में जैड़ा
नूंवो जोस आ ल्यावै
मीठी वाणी में अैड़ो जादू
सब इणनै अपणावै

◆◆

सदाचार अपणावां

मुसीबत सूं नीं घबरावां
आगै ई आगै बधता जावां
सदाचार अपणा'र सगळा
लाडे सर बण ज्यावां

स्वारथ सूं जळ ज्यावै जीवण
मैलो हो ज्यावै है तन-मन
प्यार मोकळो सब में बांटां
समझां इण नै मोटो धन

कदी नी ल्यावां झूठ काळजै
मैणत सूं ना मूंडो मोड़ां
भेदभाव रा बंधण तोड़'र
सब सूं सांचो नातो जोड़ां

श्रद्धा-सेवा सूं मन हरल्यां
खुसियां सूं भरल्यां गागर
बण'र नम्र दया रा सागर
जग में नाम करस्यां उजागर

◆◆

ISSN : 2320-0995

राजस्थली, अप्रेल-जून, 2022 (अंक : 155) रजि. नं. 31319/77 ISSN : 2320-0995

इनलैण्ड सोमानी फाउण्डेशन कानीं सूं निर्मित संस्था द्वार लोक निजर उच्छब
दिनांक 29 मार्च, 2021 री यादां

महावीर माली, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (राज.)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com